॥ गोविन्दलहरी ॥

जिसमें

सूरदास, कबीरदास, तुलसीदास, मीराबाई, देवस्वामी, विश्वरूप स्वामी, नारायण स्वामी इत्यादि अनेक प्रसिद्ध महात्माओं की बनाई हुई [illegible], भैरवी, होली, घांटो, ठुमरी, रेखता, लावनी, मल्हार, गज़ल, खेमटा, [illegible]जली और कई एक दूसरी आनन्दित चीजें हैं।

जिसको

सज्जन दासानुदास

लाला भोलानाथ महल्ला छोटी पियरी शहर बनारस ने पाठकों के चित्तविनोदार्थ संग्रह कर मुद्रित किया।

॥ काशी ॥

भारतजीवन यन्त्रालय।

सन् १८९३ ई०।

2nd. Edition 1250] [Price 4 Annas.

॥ गोविन्दलहरी ॥

भैरवी ।

गणपति विघ्नविनाशनहारे। मंगलकरन अम-ङ्गलनासन सुख के सदन उमाबरबारे॥ एकदन्त मुखगज लम्बोदर सेंदुर तिलक नयन रतनारे। महिमा अमित जपत सुर नर मुनि वेदविदित तें उदित उँजारे॥ शैलसुतासुत शैल नाम पर शैल समान हरहु दुख भारे। करि आनन्द कान सुनि साँचो मेरी अरज सुनहु चित धारे॥ राम सिया पद पंकज बसिकै मम चित भृङ्ग टरै नहिं टारे। सो बर देहु दास तुलसी कों राम सिया उर बसहिं हमारे॥ १॥

राग गौरी ।

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय-दारुणं । नवकञ्जलोचन कञ्जमुख करकञ्ज पद-कञ्जारुणं ॥ कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरं । पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरं ॥ सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं । आजानुभुज शर चाप धर संग्रामजित खरदूषणं ॥ भजु दीनबंधु दिनेश दानवदैत्यवंशनिकन्दनं । रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द दशरथनन्दनं ॥ इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनिमनरञ्जनं । मम हृदय कञ्ज निवास करि कामादि खलदलगञ्जनं ॥

ठुमरी ।

भजु मन रामचरन दिनराती । रसना कस न भजै तू हरिपद सुमिरत क्यों अलसाती ॥ रा के कहत दहत दुखदारुन सुनि विष ताप बुझाती । सुनते श्रवण सुजस रघुबर के सुनि जुड़ात हिय छाती ॥ श्रोता समत सुशील सो हरिजन है

सनाथ सुहाती । रामचन्द्र के नाम अमिअरस सो रस काहे न खाती ॥ सम्वत सोलह सै सूझ तीखा जेठ सुदी छठ स्वाती । तुलसिदास दुक विनय लिखत है प्रथम अरज की पाती ॥ ३ ॥

राग गौरी ।

मन पछितैहै अवसर बीते । दुर्लभ देह पाय हरिपद भजु कर्म वचन अरु ही ते ॥ सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न कालबली ते । हम हम करि धन धाम सँवारि अन्त चले उठि रीते ॥ सुत बनितादि जानु स्वारथरत मत करु नेह सबी ते । अन्तहु तोहि तजैंगे पामर तू न तजहि अबही ते ॥ अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़ त्याग दुराशा जीते । बुझै न काम अगिन तुलसी कहुँ विषय भोग बहु घी ते ॥ ४ ॥

राग धनाश्री ।

मेरो मन हरि जू हठ न तजै । निसि दिन नाथ देउँ सिख बहुबिधि करत सुभांउ निजै ॥ ज्यों युवती अनुभवति प्रसव अति दारुण दुख

उपजै। ह्वै अनुकूल बिसारि शूल शठ पुनि खल पतिहिं भजै ॥ लोलुप भ्रमत श्वान जिमि गृह गृह सिर पदत्राण बजै । तदपि अधम बिचरत तिहिं मारग कबहुं न मूढ़ लजै॥ हौं हार्‍यौं करि यतन बिबिधि बिधि अतिशय प्रबल अजै । तुलसिदास बस होय तबै जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ ५ ॥

धनाश्री ।

जानकीजीवन की बलि जैहौं । चित कहै रामसियापद परिहरि अब न कहूं चलि जैहौं ॥ उपजी उर प्रतीति सपनेहुं सुख प्रभुपद बिमुख न पैहौं । मन समेत या तन के बासिन्ह इहै सिखावन दैहौं ॥ श्रवननि और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं । रोकिहौं नैन बिलोकत औरहिं सीस ईसही नैहौं ॥ नातो नेह नाथ सों करि सब नातो नेह बहैहौं । यह छर भार ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहौं॥६॥

धनाश्री ।

अबलौं नसानी अब न नसैहौं । राम कृपा

भव निसा सिरानी जागे फिर न डसैहौं॥
पायो नाम चारु चिन्तामणि उर कर तें न ख-
सैहौं। स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी चित कं-
चनहिं कसैहौं॥ परबस जानि हँस्यो निज इ-
न्द्रिन्ह हूजन बस ह्वै न हँसैहौं। मन मधुकर पन
करि तुलसी रघुपतिपद कमल बसैहौं॥ ७॥

राग कल्याण।

ऐसहि जन्म समूह सिराने। प्राणनाथ रघु-
नाथ से प्रभु तजि सेवत चरन बिराने॥ जे जड़
जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने।
सूखत बदन प्रशंसत तिन्ह कहुं हरि तें अधिक
करि माने॥ सुख हित कोटि उपाय निरन्तर
करत न पाय पिराने। सदा मलीन पन्थ के
जल ज्यौं कबहुं न हृदय थिराने॥ यह दीनता
दूरि करिबे कों अमित यत्न उर आने। तुलसी
चितचिन्ता न मिटै बिन चिन्तामणि पहिचाने॥

सारंग।

सुनहु भरत दै कान सुयस हनुमान को॥

गिरिसुमेर पर्वत की ऊपर संबल मारे लागे [illegible] भाई। चहुंदिसि घेर लंगूर बीर बैठे [illegible] ॥ चौकी कठिन कपीस की [illegible] पवन को गम नाहिं। ऐसो बीर कौन मारग सों [illegible] नृपति छन माहिं॥ सुनहु भरत दै कान सु० ॥ १ ॥

सोरी रैन गई बीत होत लोहै पैठारी। भयउ किलकिला शब्द खुली बौरम की तारी॥ चिहुंकि उठे सुतपौन जब आसन देखे सून। चकित भये मुख बात न आवे भये लज्जित दुख दून॥ सुनहु भरत दै कान सुयस० ॥ २ ॥

काप्यो पौनकुमार आज नभ नख ते फारों। ससि मेलों भण्डार इत्त ते उत्त पवारों॥ सपथ करों रघुनाथ की जन्यौं अंजनी नाहिं। तीनो लोक बिलोकि बिलोकों प्रलै करों छन माहिं॥ सुनहु भरत दै कान सुयस० ॥ ३ ॥

डोलि मेरु सुमेरु श्रवन मुनि सेस सकाने। सहि न सके [illegible] भार आजु [illegible] ॥ कम्पित

असुरन दलमल कीन्ह गर्भिणी नारि कसाको ॥ मार्यो असुर पछारि कै मखपुर सम कीन। रुधिरन की सरिता बही अरु मांस भे हीन ॥
सुनहु भरत है कान सुयश० ॥ ८ ॥

अहिरावन बध कीन्ह राम कटकहिं लै आयो। जै २ कीनो लोक सुयश सनकादिक गायो॥ साहब सीताराम के तुलसी अमर अजीत। जो यहि पद निरभय ह्वै गावै परम हमारो मीत॥ सुनहु०॥९॥

राग गुजरी।

रे मन मूरख जनम गँवायो। करि अभिमान विषय सों राचेउ श्याम शरण नहिं आयौ॥ यह संसार फूल सेमर को सुन्दर देखि लुभायो। चाखन लाग्यो रूई उड़ि गई हाथ कछू नहीं आयो॥ कहा भयो अबकी मन सोचे पहिले नाहिं कमायो। कहत सूर भगवन्त भजन बिनु सिर धुनि २ पछितायो॥ १०॥

राग टोड़ी।

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजै। गुरु के ब-

मन चटल करि मानहु सन्त समागम कीजै॥ पढ़िये गुनिये भक्ति भागवत और कहा कथि कीजै। कृष्ण नाम बिनु जन्म बादि ही वृथा जिवन कह जीजै॥ कृष्ण नाम रस बह्यो जात है तृषावन्त ह्वै पीजै। सूरदास हरिसरण ताकिये जन्म सुफल करि लीजै॥ ११॥

राग झंझौंटी।

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहै। ता दिन तेरे तन तरिवर के सबै पात झरि जैहै। या देही को गर्ब न करिये स्यार काग गिध खैहै। तीन नाम तन बिष्टा कृमि ह्वै नातर खाक उड़ैहै। कहँ वह नीर कहाँ वह सोभा कहँ रँग रूप दिखैहै। जिन लोगन सों नेह करतु है तेही देखि घिनैहै। घर के कहत सवारे काढ़ो भूत होय धर खैहै। जिन पुत्रनहिं बहुत प्रतिपारेउ देवी देव मनैहैं। तेइ लै बाँस दयो खोपरी में सीस फाटि बिखरैहै। अजहूँ मूढ़ करो सतसंगत सन्तन में कछु पैहै। नर बपु-

चरन कहौ मन हरि को यम को मारगु है ।
सूरदास भगवन्त भजन बिनु वृथा सुजन्म गँवैहै॥

राग धनाश्री ।

प्रीतम जानि लेहु मन माहीं। अपने सुख की सब जग बाँध्यौ कोउ काहू को नाहीं ॥ सुख मे आय सबै मिलि बैठत रहत चहूँदिसि घेरे । विपति परी तब सब सँग छाड़े कोऊ न आवै नेरे ॥ घर की नारि बहुत हित जासौं रहत सदा सँग लागी। जब हूँ हंस तजो यह काया प्रेत २ कहि भागी ॥ या विधि को व्यौपार बन्यौ जग तासौं नेह लगायो। सूरदास भगवन्त भजन बिनु नाहक जनम गँवायो ॥ १३ ॥

राग सारंग ।

छाड़ि मन हरि बिमुखनि को संग । काहा भयो पय पान कराये विष नहिं तजत भुजंग ॥ जाके संग कुबुधी उपजे परत भजन मे भंग । काम क्रोध मद लोभ मोह मे निसिदिन रहत उमंग ॥ कागहि कहा कपूर खवाये स्वान । न्ह-

वाये गंग । खर को कहा अरगजा लेपन मरकट भूषण अंग ॥ पाहन पतित बान नहिं भेदत रीतो करत निषंग ॥ सूरदास खल कारी का- मरि चढ़त न दूजो रंग ॥ १४ ॥

सारंग ।

सजन बिन जीवत है जस प्रेत । मलिन मन्दमति डोलत घर घर उदर भरन के हेत ॥ मुख कटुवचन बकत नित निन्दा सुजन सुनै दुख देत । कबहुं पाप कै पावत पैसा गाड़ि धूरि तहँ देत ॥ गुरु ब्राह्मण अच्युतजन सज्जन जात न कबहुं निकेत । सेवा नहीं गुविन्दचरण की भवन नील को खेत ॥ कथा नहीं गुण गीत सुयश हरि साधन देव अनेत । रसना सूर बि- गारे कहँ लौं बूड़त कुटुम समेत ॥ १६ ॥

राग धनाश्री ।

भक्ति कब करिहौ जनम सिरानो । कोटि यतन कीने माया को तबौ न मुग्ध अघानो ॥ बालापन खेलतही खोयो तरुण भये गरबानो ।

काम क्रोध लोभ के वस हरि चिन्ह्यो नाहिं प-
याने ॥ हव भये कफ कण्ठ विरुँध्यो सिर धुनि
धुनि पछितानो । सूर श्याम के नेंक बिलोकत
भव निधि जाय तिरानो ॥ १६ ॥

राग देवमल्लार ।

मेरे जिय ऐसी आय बनी । छाड़ि गोपाल
और जो सुमिरों तौ लाजै जननी ॥ विष को
मेरु वाम्ह लै कीजै अमृत एक कनी । मन क्रम
बचन और नहिं चितवौं, जव कव श्याम धनी॥
कहां लै करों कांच को संग्रह छाड़ि अमोलमनी;
सूरदास भगवन्तभजन विनु तजौ जाव अपनी॥

राग कान्हरो ।

सोइ रसना जो हरिगुन गावै । नैनन की
छवि यहै चतुरता सोइ मुकुन्द मकरन्दहिं धावै॥
निर्मल चित तो तेई सांचो कृष्ण विना जिहि
और न भावै । श्रवनलिं की जु यहै अधिकाई
हरि यश नित प्रति श्रवन बचावै ॥ करतेई जु
श्याम जु कों सेवै चरननि चलि वृन्दावन धावै॥

सूरदास कहै बलि ताकी है जो सन्तन सिं प्रीति बढ़ावै॥ १८ ॥

राग धनाश्री।

मोसो पतित न और हरे। जानत हो प्रभु अन्तर्यामी जो मैं काज करे॥ ऐसो अन्ध अधम अविवेकी खोटनि करत खरे। विषयी भजे विरक्तन सेये मन धन धाम धरे॥ ज्यौं माखी मृगमद मण्डित तन पर हरि पूय परे। त्यों २ मूढ़ विषय गुञ्जा गहि चिन्तामणि बिसरे॥ कूबरि करेउ अखण्ड काम बस भूप भवन निसरे। एकै दूजै जानि अवलम्बन बैसहि पतित तरे॥ हारे त्रास करत यम किङ्कर सुनि मम नाम डरे। सूर पतित तुम पतित उधारन बिरद कि लाज धरे॥ १९॥

राग सोरठ।

राखो पत गिरवरगिरधारी। अब लौं नाथ रह्यो कछु नाहीं उबरे माथ अनाथ पुकारी॥ रथ विहीन पाँडव सुत छोरि भीम गदा कर सों

बहि डारी । बाकी पैज प्रबल पारथ की तापै
धरनि धरमसुत हारी ॥ बैठे सूर सुभाय सुभट
सब भीषम द्रोन करण ब्रतधारी । कहि न स-
कत कोउ बात परस्पर सून पतितन मेरी अपत
बिचारी ॥ लाज गँवाय दास दासिन्ह की तब
का करिहौ आय मुरारी । सूरदास लज्जा अब
राखौ पुनि पछितैहौ नगन निहारी ॥ २० ॥

सोरठ ।

पूतना विष दै अमृत पायो । जोइ २ दैयत
सोइ फल पैयत नारद वेदन गायो ॥ कोटि
गऊ राजा नृग दीनी सो कृमि ह्वै जग आयो ।
तनक सुगन्ध लगाय कूबरी सुख लूट्यो मनभायो॥
सहस यज्ञ राजा बलि कीनी बांधि पताल प-
ठायो । जन्म रङ्क द्विज दीन सुदामा निज सम
पुरी बसायो ॥ सत गाली सिसुपाल दिये प्रभु
कीर्ति कलङ्क लगायो । तजि औगुन यदुनाथ
सूर प्रभु निजसि स्वरूप मिलायो ॥ ११ ॥

धनाश्री।

कबहुं न सिवावर के गुन गाये। झूठी आस जगत में फँसि २ बिरथा जनम गँवाये॥ धन-बन्नन को देखि लोभबस निज सरूप बिसराये। कूकर सी टुकड़ा के कारन पुनि पुनि पूंछ हिलाये॥ खेलत खात हँसत औ बोलत चौथो पन निअराये। औसी बिसवा मरन होइगो जानिहुं के बौराये॥ श्रीगुरुदया सङ्ग सज्जन को ढूनकि बिना सहाये। देव चरन रति कैसे उपजै साधहु कोटि उपाये॥ २२॥

भैरव।

समझ बूझ दिल में बंदे क्या करता है क्या करता है। गुन का मालिक आपै बनता बेड़ा राम पर धरता है॥ अपना धरम छोड़ि औरों के ओछे धरम पकरता है। पजब नबी को ग़फ़लत आई साहिब को नहिं डरता है॥ जिन के ख़ातिर जान माल दे मरि २ के तूं मरता है। वे क्या तेरे काम आवैंगे उनका लहना भ-

रता है ॥ देव धरम चाहे सो कर ले आवा ग-
वन न टरता है । प्यारे केवल राम नाम से तेरा
मतलब सरता है ॥ २३ ॥

काफ़ी ।

कोइ सपूत न देखा दिल का, साँचा कना
भिलमिल का ॥ कोइ बकला कोइ बिल्ली देखा
पहिरे फ़कीरी खिलका । बाहर मुख से ज्ञान
छाँटते भीतर गोरा छिलका ॥ राम भजन में
ग़ज़ब आलसी जैसे मरद मक्खिल का । चौका
के पीसन में सुरवा पटता तोड़ा सिलका ॥ पढ़े
गुने कुछ ऐसे वैसे बड़ा घमण्ड अकिल का ।
ज़हरी सखुन मुख से निकलें मानो साँप के
विष का ॥ राम लगन बिन जप तप झूठा, झूठा
वास पर्वत का ॥ क्या कहिये गुरुदेव न पाया
महरम आँख के तिल का ॥ २४ ॥

रेखता ।

दिल से गई न ऐंठी मूँड़ क्या मुड़ाया
पैदा नहीं बना है कुन्देताज क्या कहाया

धूरू से तन धूसर [illegible] काम जिवन के क-
ठिया ॥ भौंहा [illegible] [illegible] [illegible] मोर
के [illegible] । विकैरात मैं न[illegible] वाकै सोम क
चलै कपटिया ॥ कैज छबीला [illegible] [illegible] र[illegible]
फिरंगी हटिया । कानि छूमि कै गुरु पढ़ावलि
स्याम नाम कै पटिया ॥ कुञ्जनिकुञ्ज देवकीन-
न्दन औ राधा कै सटिया । दुखी लहरियन की
लहरन मे सँवरि जात मति मटिया ॥ ३० ॥

लावनी।

प्रानी रसना रट राम सिया दिन राती ।
माया ममिता मे उमर खतम हुइ जाती ॥ ये
कहैं पुकार पुकार सुनो सब प्यारे । भजु राम
राम दुनियां से होकर न्यारे ॥ जो राम कहै
सो दोनो लोक सम्हारे। जो नहीं कहैं वे पड़ते
नर्क मझारे ॥ ज्यों ज्यों बीते दिन मौत चली
अगियाती। माया ममिता मे उमर खतम हुइ
जाती ॥ १ ॥ निज कर्म करै औ करै साधु की

मेवा। है दुनिया मे यक सबसे मीठा मेवा॥ चित लाय भजे रघुनाथ और सब देवा॥ धन उनको जिन ने निज पार लगाया खेवा॥ यह जीव है जैसे पतंग तेल से जाती। माया ममिता मे उमर खतम हुइ जाती॥ २॥ सब समुझ लेहु यह चन्द रोज की काया। है दुनियां दौलत भरमाने की माया॥ रख प्रीति मुहब्बत कर सब पर सठ दाया। इस जगत जाल मे क्या फिरता भरमाया॥ कर पुन्य धर्म की ध्वजा रहै फहराती। माया ममिता मे उमर खतम हुइ जाती॥ ३॥ भजते हैं जो दिन रात बने मस्ताने। वे परब्रह्म की भेद भी कुछ पहिचाने॥ हे नाथ रामपरताप तुम्ही को जाने। सब छोड़ के तेरे चरनो मे लिपटाने॥ कर पुन्य पाप का कोई नहीं संघाती। माया ममिता मे उमर खतम हुइ जाती॥ ४॥ ३१॥

अड़ाना कान्हरा।

कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो॥ चंदन

काठ की बनल खटोलना तापर दुलहिन सूतल हो ॥ उठौरी सखी मोरी माँग सँवारी कोइ दुलहिन मोंसे रूसल हो ॥ आये यमराज पलँग चढ़ि बैठे नैनन आंसू टूटल हो ॥ चारजने मिलि खाट उठाइन चहुंदिसि धूंधू उठल हो ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो जग से नाता टूटल हो ॥

खमाच ।

पिया ऊँची रे अँटरिया तोरी देखन चली ॥ ऊँची अँटरिया जरद किनरिया लगी नाम की डोरिया । चाँद सुरज सम दियना बरतु हैं ता बिच भूली डगरिया ॥ पाँच पचीस तीन घर बनियां मनुआँ है चौधिरिया । मुंशी है कुतवाल ज्ञान को चहुंदिसि लागी बजरिया ॥ आठ मरातब दस दरवाजा नौ मे लागी केवरिया । खिरिकी बैठि गोरी चितवन लागी उपरां झाँप झोपरिया ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो गुरु की चरन बलिहरिया । साधु सन्त मिलि सौदा करिहैं मांखैं मुरुख अनरिया ॥ ३६ ॥

ठुमरी ।

माई मैं तो गोविंद सो अटकी । चकित भयि हैं हग दोउ मेरे लखि शोभा नट की ॥ शोभा अंग अंग प्रति भूषन झलकाला तट की । मोर मकुट कटि किङ्किनि राजै दुति दामिनि पट की ॥ रमित भई हौं साँवर के संग लोग कहैं भटकी । छुटी लाज कुलकानि लोग डर रही न घर हटकी ॥ मीरा प्रभु के संग फिरैगी कुञ्ज कुञ्ज लपटी । बिना गोपाल लाल बिन सजनी को जानै घट की ॥ २४ ॥

परज ।

बौरे मन हर भजु दम पर दम, सुनि सुनि के नाम काँपत अति जम ॥ हरहर रटत हरत सब सङ्कट, बढ़त तेज चमकत चमचम ॥ दीन प्रीति उपजतु है उर मे, छूटि जातु सबरो भ्रम भ्रम ॥ अरधङ्गी छबि अधिक सोहावन, करत नृत्य सुन्दर छमछम ॥ जाके जटा मे गङ्ग बिराजैं, कर बाजै डमरु डमडम ॥ झाड़ कपट स-

गरी चतुराई, करहु प्रेम नित नेम धरम ॥ मो
सम पतित अनेकन तारे, नाम लेत तजि जात
अधम ॥ होहु दयाल कृपाल बिजासी, राखि
लेहु मेरी लाज सरम ॥ ३५ ॥

खम्माच ।

॥ कैलाशपती महाराज शङ्कर शिव बम् २
भोला ॥ ओढ़े सिंहचाल गले मुण्डमाल लोचन
विशाल हैं लाल लाल, माथे चन्द्रबाल सुन्दर
विराज । शंकर शिव० ॥ परब्रह्म रूप जैसे छांह
धूप निरखत सरूप भये चकित भूप गति डि-
मिक डिमिक कर डमरू बाज । शंकर शिव० ॥
बघरा ओढ़ छवि अङ्गअङ्ग लिये गौरि संग सोहैं
सीस गङ्ग पिये भङ्ग रङ्ग सो करत काज । शं-
कर शिव० ॥ कहैं दास बिजासि कर जोर जोर
देखी भक्ति हाथ राखो लाज मोर अब चरन
छोड़ि कहां जाउँ आज । शंकर शिव० ॥ ३६ ॥

प्रभाती ।

निज असार बिचार यही शिव नाम जपो

दिन राती रे । जन्म मरन दुख छूटि जाय तब तीनो ताप नसाती रे ॥ ज्ञानी सोई सुसील जगत मे देत सलाह सुहाती रे । गौरीपति के भजन बिना यह बयस वृथा सब जाती रे ॥ शिवपद बिमुख मनुज जग मे ते जानहु आतम-घाती रे । नरक परे पछिलात सदा यमगण मारत घन छाती रे ॥ देविसहाय समाय रह्यो शिव प्रेम नेम बहु भाँती रे । हृदय बिमल मे देखि परैं शिव चरणकमल नख पाती रे ॥ ३७ ॥

प्रभाती ।

हौं कपूत निज पूत तिहारो अन्नपूरणे माई री । तेरी कृपा कटाक्ष किये ते मेरी सब बनि जाई री ॥ काशीपुरी सकल जगपावनि भूमि से भिन्न बनाई री । जमपुर जीव जान नहिं पावैं जहँ तेरी ठकुराई री ॥ भागीरथी और रवितनया सारद सङ्ग लवाई री । तुव पुर को प्रताप लखि जननी बास कियो तहँ आई री ॥ अणिमादिक सब अन्न मधुर लै करत फिरत पहुनाई

री। सुरदुर्लभ सुख देत सबन को अन्त मोच्छ पद पाई री॥ आनद मगन सुमन सुर बरखैं बाजत गगन बधाई री। दस अरु चार भुवन चौधी से शोभा अति अधिकाई री॥ दरसन से अघ दूर होत हैं कवि बरनत सकुचाई री। आप पियारे पास बसाये हमैं दियो बिसराई री॥ गो द्विज दुखित देखि जब जननी तब तुम करत सहाई री। भवसागर तारण को तरणी पुरी पुनीत बनाई री॥ देविसहाय अमी करुणा बिच मो मन रह्यो समाई री। तेरे चरण कमल नख निरखत शोक समूह नसाई री॥३८॥

दस।

सोच ना करो रे मन मे भोला देनेवाला है॥ गौरी अरधङ्गा जाके भंगा को अहारा है। हाथ मे पिनाक लीन्हे सोई बैलवाला है॥ गोरो सो शरीर जाको और कण्ठ काला है। सोई अवधूत मेरा मोहि प्रतिपाला है॥ महा विषपान कीन्हे नैन जाके लाला है। दुष्टन के नासिबे

को तीजे नैन ज्वाला है ॥ देवी को सहाय तेरा सेवक निराला है । वोही मेरा स्वामी जाके गले मुण्डमाला है ॥ ३९ ॥

आशा योगिया ।

मा सम ना कोउ दूसर पापी । रामनाम शुभ मन्त्रं छाड़ि कै करत पिशाची जापी ॥ मारन मोहन वशीकरन के साधन मे मन थापी। भक्ति विराग अरु योग ज्ञान गति सुनत अन्तर काँपी ॥ दान धर्म्म व्रत पूजा तीरथ कीन्हे नाहिं कदापी । खेलत जुआ फिरत निशिवासर चोरी नारि अलापी ॥ पर उपकार करत तन काँपत छाड़त स्वास विलापी । देखत सुनत कहत पर कीरति गलिगो गात सुरापी ॥ गुरु निन्दा पर द्रोह करन को सहसाबाहु सुरापी । लक्ष्मीपति को देखि डरै है तद्यपि रामप्रतापी ॥ ४० ॥

बिलावल ।

प्रभु हो कोटिन दोष हमारो। कहँा छपाओं छपत नहिं तुम तें रवि शशि नयन तिहारो ॥

जल थल अनल अकाश पवन मिलि पाँचो हैं रखवारो। पल २ हेरि रहत निसिबासर तिहुँ पुर साँझ सकारो ॥ सोवत जागत उठत बैठत करत फिरत व्यवहारो। रहत सदा सँग साथ न छाड़त काल पुरुष बरियारो ॥ बाहर भीतर बैठि रहे हैं घट २ बोलनिहारो। दुख सुख पाप पुन्य के मालिक निजजन जानि उबारो ॥ कहाँ लाज कर नारि नाह सों जिन देखि तन सारो। लक्ष्मीपति के स्वामी केशव भवनद पार उतारो ॥

लावनी ।

तनू महल किया तैयार उसी ब्रह्मा ने। उसके भीतर का हाल कोई क्या जाने ॥ क्या कहैं चतुर करता की हम चतुराई। नै रक्त धातु की उसके बीच भराई ॥ दो खम्भ लगे मजबूत बड़ी दृढ़ताई। छै चक्र गली नौ जिस मे खूब सफ़ाई ॥ लग रहा फुहारा चले न रोके माने। उसके भीतर का हाल कोई क्या जाने ॥ हैं जिसमे बहत्तर कोठे औ नौ द्वारे। अरु जोड़

तीन सौ साठ व खन्दक न्यारे ॥ दो सौ सत्तर दिन मे रचा भया सुन प्यारे। दो डगडे जिसमें करैं महल का कारे ॥ सब बातें उसकी कहिये कौन बखानें । उसके भीतर का हाल कोई क्या जाने ॥ २ ॥ हैं उत्तम उसमे शिखर जिसे बतलाते । भीतर पट मे बत्तीस खम्भ दरसाते ॥ दो लगे लाल वो जगमग जोति जगाते । इक्कीस हजार छसौ नित आते जाते ॥ जिह्वा स्वामी जप करे प्रेम रस साने । उसके भीतर का हाल कोई क्या जानें ॥३॥ पैदा होते नित पाँच असज्जन सज्जन । जिनकी महिमा का करें कहांतक बरनन ॥ नहिं रहे महल ये गिरे करन औ रावन । इससे बेहतर लग रहो गुरु के चरनन ॥ ये रामप्रताप के दिल मे ख्याल समाने। उस्के भीतर का हाल कोई क्या जाने ॥

खम्माच ।

ज्ञान कृपान गहो मन मेरो॥ अति हुसियार रहो निसिबासर रिपु घेरो चहुं फेरो । मोह

मान मद मारु प्रबल रिपु वृन्द संग फउज घनेरो ॥ करत उजारि भवन सबही को भर न परो वृन्द केरो । सम दम जोग विराग जतन बहु अहिरो कवच अछेरो ॥ होय अभय मारो रिपु-दल को देवहु दुसह दरेरो । विश्वरूप सुख सिन्धु मगन रहु दसौ दिसा जय तेरो ॥ ४३ ॥

पर्ज ।

गहु मन अजहुं शरण रघुबर की । दीनबन्धु प्रभु जग हितकारक, जीवन धन अति निशि दिन हरि की ॥ ढार पांय जिमि नीर ढरतु है तैसे अन्तहु धन जन ढरकी । यह तन की कछु अवधि न देखत, नदी कूल जिमि गति तरिवर की ॥ दामिनि दमकि चमकि जिमि थिर नहिं ऐसो धरणी भोग अमर की । ता महँ हेतु करत निशिबासर सुधि नहिं काल कराल कुसर की ॥ साधन को अवसर भल पायो, दुर्लभ साज लहेउ नर तन की । दीनबन्धु जगदीश हेतु कारु छोड़ तुरित मन आस अपर की ॥ ४४ ॥

विहाग ।

मन रे विषय कारन बहु नाचो । जो जगदीश ताहि बिसरायउ घर २ निसिदिन जाँचो ॥ गुरु उपदेश नहीं ठहरत उर जैसे जलघट काँचो । विषय वचन सुनि तुरत ढरत सठ जिमि पावक घृत आँचो ॥ अन्ध भये मणि नाम न देखत बैरबस काँचहि राँचो । बिरथा चलत कुमारग निसिदिन वेद पुराणहिँ बाँचो ॥ झूठ पसार सार करि जानत गहत न हरि पद साँचो । विघ्नरूप अवसर के चूके जमगण देत तमाँचो ॥

घनाक्षरी ।

बालपन मातु पितु मोद के प्रमोद झेले बालकन सङ्ग खेले अति सुख पाइ कै । तरुन भये तो तुङ्ग जोबन जलूस जागे तरुनिन सङ्ग लागे सुरति लगाइ कै ॥ कहै चिरजीवी अब बिरध भयो है तौहूं घरहो सम्हारै सारो औसर नसाइ कै । कुमति के बेरे क्यों न सोचत सबेरे येरे मेरे मन मूढ़ क्या कमायो इतै आइ कै ॥४६॥

लावनी ।

घर मिलै उसै जो अपना घर खोवै है । जो घर रक्खै वह घर २ मे रोवै है ॥ जो राज तजै वह महाराज करता है । और जान तजै सो कभी नहीं मरता है ॥ सुख त्यागै तो वह और का दुख हरता है । धन तजै तो फिर दौलत से घर भरता है ॥ जो पलँग तजै वह फूलों पर सोवै है । जो घर रक्खै वह घर २ मे रोवै है ॥१॥ जो पर दारा को तजै वह पावै रानी । औ करै झूठ को त्याग सिद्ध होय बानी ॥ जो दुर्बुद्धी को तजै वही हो ज्ञानी । मनसा त्यागै तो मिलै ऋद्धि मनमानी ॥ जो सर्व तजै उस को सब कुछ होवै है । जो घर रक्खै वह घर २ मे रोवै है ॥२॥ जो कुछ इच्छा नहिं करै वह इच्छा पावै । औ स्वाद तजै तो अमृत भोजन खावै ॥ नहिं मांगै तो फल पावै जो मन भावै । है त्याग मे तीनों लोक वेद यों गावै ॥ जो मैला होके रहै वह दिल धोवै है । जो घर रक्खै वह घर २ मे रोवै

है ॥३॥ जो पच्छवाद को तजै वह सब को जीते । जो काम तजै सो होय काम मन चीते ॥ कहै देवीसिंह हरनाम जिन्हों ने लीते । उनको गोविन्द ने ब्रह्मलोकपुर दीते ॥ अब बनारसी घर खोके ब्रह्म होवै है । जो घर रक्खै वह घर २ मे रोवै है ॥ ४ ॥ ४७ ॥

कवित्त ।

मानुष शरीर सतखण्ड अति जर्जर है ताहू मे पतन लखु ह्वैहै कोहू काल मे । मातु पिता बंधु आदि मीत सुत वित्त नारि कहो कौन तेरो जाते पर्यो जगजाल मे ॥ कहै भगवान नेकु मन मे बिचारि देखो कोई ना सहाय जबै परैगो बेहाल मे । ताते धरु ध्यान गुणगान करु नाम जपु नातो दृढ़ राखो एक राधे नन्दलाल मे ॥ ४८ ॥

घांटो ।

धनि जगजननी भंवानी हो रामा, अचल बरदानी ॥ जगमग २ जोति बिराजै तेज प्रताप निधानी ॥ महिमा अगम अपार बिंधेसरि सेस

सुरेस न जानी ॥ दुखहरनी सुख सम्पति भरनी कारनी लखन कल्यानी ॥ हो रामा ॥ ४९ ॥

होरी ।

चेतु रे तैं नया हलवाई ॥ टेक ॥ ज्ञान को चूल्हा सुमति से खोदो ध्यान कराही चढ़ाई । दुविधा कुमति को ईंधन लाओ प्रेम अगिन धधकाई । बैठु दृढ़ आसन लाई ॥१॥ सुरति निरत कर घृत चढ़ाओ करछुल नेम बनाई । धरम विवेक की मैदा मिसिरी रचहु समाधि लगाई । बनै तब नाम मिठाई ॥ २ ॥ साचे बाट सबन को तोलो गहकिन से मिलु धाई । कपट कपाट कबहुं जनि खोलहु बोलहु बचन सुहाई । लगै तब तेरी उपाई ॥ ३ ॥ सुखमन बाट मे हाट लगाओ जाहु सिरी न उँघाई । ठग चोरन से सचेते रहियो नाहीं तो मूल गँवाई । मरोगे सदा पछताई ॥ ५० ॥

चांटो ।

गुड़ुई खेलत सैयां मिलखैं हो रामा, बाबुल

की नगरिया॥ छोड़ल चीर सेत रँग सारी पहिरल कुसुमी चुनरिया॥ निर्गुन सेंदुर सर्गुन रँग ईंगुरा सारल माँग मझरिया॥ लखनदास नइ नारि सुहागिनि हरि के चरन बलिहरिया॥५१॥

होरी।

चेतुरे तैं महा मदमाती॥ टेक॥ जो लगि मातु पिता घर प्यारी खेलि कूदि अठिलाती। गवने की चेत करी नहिं तनिको सुनतहि नाम पराती। मुखे कछु बोल न आती॥ १॥ निज प्रीतम से प्रीति नहीं है औरन सङ्ग लुभाती। नाम अमीरस त्यागि दियो है विषय हलाहल खाती। कभी न हिये पछताती॥ २॥ खेलत रही सखिन के साथे आइ गई पिय पाती। देखत ताहि नयन.भरि आयो बिहरि गई है छाती। कही कछु बात न जाती॥ ३॥ कहत सिरी पुर देखन धाये प्यारी गवने जाती। जो सखिया निज प्रीतम चीन्हत सोई सदा सुख पाती। हिये मे पिया के समाती॥ ४॥ ५२॥

घांटो ।

हम धन जावै गवनवाँ हो रामा, सैयां के भवनवाँ ॥ ललित सेंदुर सिर कजर नयनवाँ, अम्बुज दोउ फल लै जोबनवाँ ॥ झिनी २ सारी नई नविन गहनवाँ, हीरा मोती लागे दर दामनवाँ ॥ ओढ़ि पहिरि धन ठाढ़ी अँगनवाँ, चलि भई सैया के गोहनवाँ ॥ बरनै लखन घाँटो पद निरगुनवाँ, अब नहिं होइहै मोर आवनवाँ॥५३॥

कवित्त ।

करत रहत धन्ध कछुक न जान्यौ अन्ध आवत निकट दिन अगिलो झपाक है । जैसे बाज तीतर को दाबत अचानकही जैसे साँप मेंडक को गसत गपाक है ॥ जैसे मच्छिका को घात मकरी करत जात जैसे बक मीनन को लीलत लपाक है । सुन्दर कहत राम चेत रे अचेत नर ऐसे काल आय तोहि लै जैहै टपाक है ॥ ५४ ॥

घांटो ।

गुरु के बचन गठिअवतिउँ, रामा सुख प-

वतिउँ ॥ जौ जनतिउँ देखसि दुख लागी हूनी नयना मूदवतिउँ ॥ जौ जनतिउँ चाहै मोरि वैरिनि तौ यहि खोरिं बहवतिउँ ॥ जौ जनतिउँ संगै बड़ पापी तौ न मनहिं लपटवतिउँ ॥ आपन द्वेष धरम जौ जनतिउँ बैठल हरिगुन गवतिउँ ॥ रामा सुखं पवतिउँ ॥ ५५ ॥

लावनी।

भजन भाव कछु बंनै कहाँ से मन माया के बीच फसा। तन काया मे, ऐश करने को ये दिल आन बसा ॥ खाने को इच्छा भोजन चढ़ने को असवारी चहिये। दिल लगने को, चमन की हवा व गुल क्यारी चहिये ॥ झूठ होय या सच्च मगर करना बातें प्यारी चहिये। सारी रात भर, संनम के साथ मजेदारी चहिये॥ रङ्ग-महल के बीच चाहिये जर्दोजी का पलँग कसा। तन काया मे, ऐशं करने को ये दिल आन बसा ॥ १ ॥ दिल में सोचता यही कि मुझ को दुनियां की दौलत चहिये। सिंवा नीच के, नहीं

अशराफ़ों की सुहबत चहिये ॥ हमदम से कर मज़ाक़ करना उलफ़त में आफ़त धहिये । जो कुछ होवे, बला से ऐयाशी अशरत चहिये ॥ इस को मारा उस को पीटा किसी का आकर माल भसा । तन काया में ऐश करने को ये दिल आन बसा ॥ २ ॥ किसी का होता होय भला तो उंसी जगह जाना चहिये। इधर उधर की, बात दो कहि बिगारि आंना चहिये ॥ बात नहीं लग सके तो फिर झूठिही क़सम खाना चहिये । किसी तरह से, ग़रीबों के तईं रुलवा-ना चहिये ॥ सवाब कहां से होय पेट में उनके जाय अज़ाब धसा । तन काया में, ऐश करने को ये दिल आन बसा ॥ ३ ॥ ऐसे बद बख़्तों की गति कहु क्योंकर के होनी चहिये । उन्हें पाप की, निशानी तन मन से धोनी चहिये ॥ बख़्तासिंह यों कहै पाप की क्यों गठरी ढोनी चहिये । उस मालिक के, रूबरू बात नहीं खोनी चहिये ॥ छैया सिंह की सुनि सुनि बातें कृष्ण-

सनम खिलखिला हँसा । तन काया मे, ऐश करने को ये दिल श्रान बसा ॥ ५६ ॥

घांटो ।

पिया बिनु निदिया न आवै हो रामा कैसी करूँ मैं ॥ जगमग भवन भयानक लागे बिरह अगिन बरसावे ॥ सूनी सेज देखि होत दुख टूना विधि लिखि कवन मिटावे ॥ बरनै लखन पिया नाम अमियरस पिये अमरपुर पावै ॥ ५७ ॥

राग जंगला ।

जंगले मे हम डगर भुलानी री । कांकड़ आटक गहन अँधेरो हेरत पन्थ हिरानी री ॥ मारग सुगम मोहि नहिं सूझै बीहड़ लखि बिलखानी री । जित देखौं तित खोह नार नद तामे मैलो पानी री ॥ गरजत घोर भालु कपि केहरि सुनत घोष घबरानी री । हरिबिलास हरिनाम भानु बिनु भटकत बैस सिरानी री॥५८॥

घनाक्षरी ।

तजिकै अनेक तप तीरथ तपस्या तुंग ऐसे

कलिकाल के जवाल मे नियहु रे । वेद औ पुरान शास्त्र सम्मत विचार उर आखन तरंगैं त्यागि एकै राह रहुरे ॥ कहै चिरजीवी जो पै आपनी कुशल चाहै तौ ये हमारी कही साची मान गहुरे । बैठत उठत जागे सोवत सु आठो जाम राधाकृष्ण राधाकृष्ण राधाकृष्ण कहुरे॥५८॥

होरी ।

पवनतनय आजु धूम मचाई ॥ टेक ॥ वारिध नांघि गये लङ्का महँ तरु पर जाइ छुपाई । व्याकुल देखि सिया को जबहीं मूंदरि दियौ गिराई । सिया हिये हरषि उठाई ॥ १ ॥ मूंदरि देखि सिया अति भरमीं मन महँ तरक बढ़ाई । सुमिरन कीन्ह प्रगट तब भयउ सिया मन आसिख पाई । धस्यो तब उपवन जाई ॥ २ ॥ उपवन जाइ कै पेड़ उपाख्यो रावन पकरि मँगाई । पूछ बांधि पट तेल चुभायो पावक दियो लगाई । चढ्यो कपि गढ़ पर धाई ॥ ३ ॥ कूदि फाँदि के

पुर सब जारत दसमुख हिये अधुलाई । लागी आग जरत पुर सगरो बिलपत लोग लुगाई । सिरी हिये दुख समाई ॥ ४ ॥ ६० ॥

रघुबर से जाय कहो री ॥ ये हनुमान अञ्जनी नन्दन कहियो सँदेस बहोरी । सीस नवाय चरन नहि लीजो कीजो बिनती मेरी । राम से दोउ कर जोरी ॥ १ ॥ सुरपतिसुर की करनी सुनैहो कठिन धनुष जिन तोरी । सो भुजबल हम देखत नाहीं रावन दुष्ट हरो री ॥ कहत अस जनक किशोरी ॥ २ ॥ दिन नहीं चैन रात नहिं निद्रा असन बसन बिसरो री । घड़ी घड़ी पल मोहि युग सम बीतत सुधि न लियो प्रभु मोरी । धीर नहिं जात धरो री ॥ ३ ॥ अंगद आदि सकल कपि आये सिन्धु तीर इक ठोरी । तुलसीदास धीर धरु माता लङ्क जरै जैसे होरी । निसर सब आनि मरो री ॥ ४ ॥ ६१ ॥

मेरी मानो कही दसकन्ध अन्ध रघुबर सों बैर करै न ॥ सतयोजन मरजाद सिंधु को ताको

बाँधि सकै न। सेतु बाँधि उतरे रघुनन्दन लिये भालु कपि सैन। समर कोई जीति सकै न ॥ १ ॥ होली सी लङ्क जराइ दियो है कपि सों कोउ बचै न। करि करि दाव बीर सब थाके पावक प्रबल बुझै न। यतन कोउ कोटि करै न ॥ २ ॥ तुमं जीवन अहिवात हमारे सत्य कहौं यह बयन। कीन्हें रारि नहीं बचिहौ जाइ गिरौ हरि पयन। भगे तीनोलोक बचै न ॥ ३ ॥ कहत मदोदरि सुनि पिय रावनं निसचर कान करै न। तुलसीदास मूढ़ यह रावन फूटे हिया के नैन। ताहि कछु सूझि परै न ॥ ६२ ॥

लावनी ।

कहै मदोदरि सुनो पिया तुम्हें यही बात करना चहिये। रामचन्द्र को, जानकी देके चरन पड़ना चहिये ॥ हैंगे पूरण ब्रह्म राम जी दीन दुखी के हितकारी। नर तन धरिके, जगत मे लीला प्रभु ने बिस्तारी ॥ बड़े २ निसचर को मारिके कीन्हां मख की रखवारी। गौतमनारी,

रही जो शिला उसे प्रभु ने तारी॥ कोमल जिनके चरन कमल उस चरनन की है बलिहारी। सुन दसकन्धर, जगत में जिनकी महिमा है भारी॥

दोहा ।

बड़े दीनदयाल हैं प्रभु, सीतापति भगवान।
जोगीजती सुरसिद्धमुनी, निसदिन धरते ध्यान॥

ऐसे राम का ध्यान तुम्हें दिलके अन्दर धरना चहिये। रामचन्द्र को, जानकी देके चरन पड़ना चहिये ॥ १ ॥

देस देस के भूपति आये जनक सभा मे सुनो पिया। नहीं किसी से, टरा धनु गया सभों का हारि हिया॥ कौतुक मे श्रीरामचन्द्र ने तीन खण्ड धनु तोरि दिया। धनुष तोरिके, राम ने तहां जानकी व्याह लिया॥ लिया जानकी व्याह राम ने तब क्यों नहिं संग्राम किया। हठ को छोड़ो, दसानन मिलो राम से देके सिया॥

दोहा ।

सीपुनखा की हाल किए ये, खरदूषन का नास।

एक बान मे बालि को, निकरि गई तन सांस ॥ हैं बल के धाम राम उनसे तुमको डरना च-हिये । रामचन्द्र को, जानकी देके चरन प-कड़ना चहिये ॥ २ ॥

दोहा ।

फिरैं सिंघ की तरह संग मे लछिमन जिनके हैं प्यारे । बीर धुरन्धर, बड़े हैं तीर धनुष कर मे धारे ॥ हनूमान सो पायक जिनके नधि आये सागर पारे । मधुवन भीतर, जाय फल खाये बिटप सब उज्जारे ॥ एक मुष्ट मे हत्यो अछय को गर्द मर्द निखर डारे । तुम्हरे देखत दसानन फूंक दिया मे लङ्का जारे ॥

दोहा ।

करौं विनय कर जोरिकै पिय मानो मेरी बात। तजो बैर रघुनाथ से, मेरो बना रहै अहिबात ॥ यही उचित है पिया तुम्हे रघुबर से नहिं ल-ड़ना चहिये । रामचन्द्र को जानकी देके चरन पकड़ना चहिये ॥ ३ ॥

नर मत जानो रामचन्द्र को सब घट व्यापित हैं भगवान। ममता माया, छोड़िके रामचन्द्र का धर तू ध्यान ॥ मंदोदरि का वचन लगा रावन के मन मे तीर समान। होत प्रात ही, जाइ उठि सभा बीच बैठा अज्ञान ॥ महा मूढ़ मूरख अभिमानी राम विमुख चाहै कल्यान। ग्वाल मदारी, राम का ध्यान धरैं दिल के दरम्यान ॥

। दोहा।

रमप्रसाद के खियाल हैं सब मुल्कों मे सरनाम।
लालू सेठ उस्ताद का है कासीजी मे धाम ॥
कथ के नरायन कहैं हमे तो राम चरित बरना चहिये। रामचन्द्र को जानकी दैके चरन पकड़ना चहिये ॥ ४ ॥ ६३ ॥

॥ ग़ज़ल तसनीफ़ कर्दः संग्रहकर्त्ता ॥

रावन् से कहती है मंदोदर ऐ मेरे मूनिस जिगर। मान ले कहना मेरा मत राम से तू रार कर ॥ होगा आजिज़ तू बहुत हाथों से लछमन राम के। गर न मानो बात मेरी छोड़

कर अपनी असरर ॥ मुनसफ़ी की है. जगह इस
वक़ तुझको पुर्ज़रूर। है सरासर तूही मुलज़िम
लाया सीता जी को हर ॥ राम लक्षमन क़त्ल
मे मशगूल थे उस मिर्ग के । जो बना इर्शाद
से तेरे था मारिच नीशचर ॥ देख तनहा जा-
नकी को बेकुसुक औ लामकाँ । ले उड़ा धोखे
से उन्को करके कैसा मक्रो फ़र । क्या यही द-
स्तूर शाहों मे मुरौविज है तमाम । नीतिशाही
तर्क कर दुज़्दी प बाँधे खुद कमर ॥ था नहीं
लाज़िम तुझे खुफ़िय: में हरना सीय का । है
नहीं वह मर्द हर्गिज़ छिप के मारे जो तबर ॥
थी बुज़ुर्गी आपकी गर मूबमू लक्षमन के हो ।
क़ूवते बाज़ू से अपने लड़ के लाते उन्को घर ॥
फ़िलहक़ीक़त काम तूने है बहुत बेजा किया।
कुछ तवक़: जिस्से अपने जाँ रिहाई की न कर ॥
जा पकड़ क़दमे मुबारक देके सिय रघुनाथ को।
बख़्शेंगे तेरी सब ख़ता तूने जो की है बेख़तर ॥
कैसे कैसे पतित तारे आये उन्की जो सरन ।

देती हूं सलाह तुझ को मैं इसी उम्मेद पर ॥ मासिवा तद्बीर दीगर जाँ खिलासी की न जान । कोई दम में जोश प्याला अब तेरा जाता है भर ॥ यह नहीं मुमकिन कि युरिश राम को तू दे शिकस्त । जिस जगह मौजूद लाखों पहलवाँ हैं नामवर ॥ एक की देखी है कुदरत आप ने तो चश्म से । कोई हमसानी न उस्का एक भी निकला इधर ॥ क्या किया वीरों की हालत लङ्का कैसी खाक की । कुछ नहीं बन आई तुमसे चल दिया सिंध नाघ कर ॥ जिस्के तनहा दूत ने ऐसा किया सबको ज़लील । फिर यह कब अग़लब है मालिक से तुझे पावा ज़फ़र ॥ पस अब अपनी छोड़ दे तू ज़िद्द ऐ मर्ग़-रसीद । क्यों अबस करता है मुल्के जाविदानी की सफ़र ॥ आके तुम भी कुछ इसी समझा दो भोलेनाथ जी । पन्द शायद आप की कर जावे इस्को कुछ असर ॥ ६४ ॥

मुकट की ॥ केसर भाल तिलक सुखमा के नाक बुलाक हलन हिय खटकी । खञ्जन नैन मधुर मद गंजन लज्जित ह्वै मृग बनबन भटकी । लटकत अलक कपोलन ऊपर घुंघुरारी कारी लट लटकी । उर बनमाल सोहै कर कंगन सेल्हा श्याम सुरँग रँग चटकी ॥ श्याम सुरत पै अति छवि छाजै काछनि कटि पीताम्बर पट की । हरिजन सरन निरखि छवि हरि की हिय ते खोल किवाड़ कपट की ॥ ६८ ॥

ठुमरी ।

इक दिन वंसी श्याम बजाई ॥ जैसे भुजंगम बैठि डार पर मुख दे फल नहिं खाई । गौअन अन धन चरन छाड़ दियो बाछा पियत न गाई ॥इक०॥ मोहीं नारि असुर मुनि मोहि गगन बदरिया छाई । जमुनानीर थीर ह्वै बैठे कुञ्ज रहे कुम्हिलाई ॥इक०॥ मोंही है वृषभान लाड़िली पाँव पिआदे धाई । चलत न रविरथ हंसन विलोकित शङ्कर ध्यान छोड़ाई ॥इक०॥ उलटि प-

पान पर्यो है महीतल रिपुदल धरि सितलाई । सूरश्याम सों यों जा कहियें सुधि हमरी बिसराई ॥

राग मल्हार ।

बंशी श्रवन सुनि गोपकुमारी ॥ अति आतुर ह्वै चलति श्याम पै तन मन की सब सुरति बिसारी ॥ गल को हार पहिरि निज कटि मे कटि की किङ्किनि गल मे डारी । पग पायल लै धारत कर मे कर की पहुंचियाँ पगन मझारी ॥ कान बुलाक कपोल पै बेंदी नाक मे पहिरी कान की बारी । एक नयन अंजन बिन सोहै एक नयन मे काजर धारी ॥ कोउ भोजन पति परसत छोरी कोउ जेंवत कर ग्रास बिधारी । नारायण जो जैसे हुती घर तैसेही उठि बिपिन पधारी ॥ ७० ॥

झँझोटी का जिला ।

सखी तुम नैक तो रूप देखावो । घूंघटपट मुख ओट करो क्यों याहि तनक सरकावो ॥ ब्रज मे लाज करै सो बौरी हँसि२ कै बतरावो । ना-

राधा हम दोउ बराबर क्यों इतनी सकुचावै ॥

राग पुर्वी ।

ऐसे जिनि बोलौ नन्द के लाला । छाड़ि-देहु अँचरा मेरो मोकों जानत चोरसि बाला ॥ बार २ मैं तुमहिं कहति हौं परिहौ बहुरिं जंजाला । जोबन रूप देखि ललचाने अबहीं ते ये ख्याला ॥ तरुणाई तन आवन दीजै कत जिय होत बिहाला ॥ सूरश्याम उर तें कर टारहु टूटै गो मोतिन को माला ॥ ७२ ॥

लावनी ।

गोरस लै बेचन चली सखी मुसकाती । सब कीन्हे तन सिंगार मदन मदमाती ॥ मग ठाढ़े नन्दकिशोर लकुटि कर धारे । बन डोलत लीन्हे धेनु चरावनहारे ॥ सँग सखा लिये दस बीस गोप के बारे । सब घेर लई ब्रजबाल श्यामघन कारे ॥ लैहौं मैं आज अंगात जहाँ तुम जाती । गोरस लै बेचन चली सखी मुसकाती ॥ १ ॥ बोली इक बिहँसि रिसाय सुनो गिरधारी । मथि

कंसराज को कठिन राज है भारी ॥ सब जाति पै ठकुराइ श्याम बनवारी । मोहन तुम कब के भये दान अधिकारी ॥ ब्रजराज कसोदा स- रस सूत छतपंती । गोरस लै बेचन चली सखी मुसकाती ॥ १ ॥ जाने नहिं मैंने करे कोटि चतुराई । न्रप बोलि पठावहु तुमहिं लेहु छोड़ाई ॥ नित बेचत गोरस भोर होत उठि धाई । मोहि पकरि मिलो हो आज नवल लरकाई ॥ दीजो दिन २ को दान कहा अठिलाती । गो- रस लै बेचन चली सखी मुसकाती ॥ २ ॥ करि घूंघट पट की ओट ओट करि गोरी । कीजै हरिं दधि को दान गयल तजु मोरी ॥ लीन्हे हरि कण्ठ लगाय मैन रँग बोरी । तब भये धाम घनश्याम प्रीति अति जोरी ॥ पिक हरिबिलास वर चहत भक्ति रस साती । गोरस लै बेचन चली सखी मुसकाती ॥ ४ ॥ ७२ ॥

राग काफ़ी ।

मेरे बरजोरी अबीर लगायो लँगर ब्रजराज

दुखारो॥ हम सब बाल रहीं ब्रज भरिके कैसो और हमारो। गागरि फोरि मरोरत पटकी औ कंचुकिपट फारे॥ बहुरि खसि काँकर मारो॥ गारी देत हरि लाज न आवै कारे मन तन कारो। खोलि २ घूंघट आरन मे सबको बदन निहारो॥ कोउ नहिं बरजनहारो॥ अब कैसे लाज रहै मम सजनी मोहन बैर सम्हारो। हरिबिलास नित संग सखा लै छेकत यमुनकिनारो। चलौ नृप कंस पुकारो॥ ७४॥

राग कालिंगड़ा धीमाताल।

ब्रज मे कैसे बसैं री माई। जहाँ नित प्रति उत्पात करतु है तेरो कुंवरकान्हाई॥ भोरहिं मैं सोवत आँगन मे अचकहिँ आय जगाई। उठ री सखी तोहि द्वार पै टेरत कोउ एक लुगाई॥ मैं तो द्वार पै देखिवे निकसी को है कहां ते आई। पीछे ते इन घर भीतर सों साँकर तुरत लगाई॥ मैं बाहर ये भवन माहिं मन मानत धूम मचाई। बासन फोरि तोरि सब छीके दधि

गोरस ढरकाई ॥ यह कौतुक सुनि के व्रजवनिता निरखन को सब धाई ॥ हँसि २ के मिलि बूझत मोसों कहा कीनो फैलाई ॥ भांति २ की बोली बोलत जो जाके मन आई । मैं अपने मन कहुं नारीयब, यह कहा कुमति कमाई ॥

धनाश्री ।

आजि गयो मेरो भाजन फोरि । लरिका सहस एक संग लीन्हे नाचत फिरत साँकरी खोरि ॥ मारग तौ कछु चलन न पावै धावत गोरस लेत अजोरि । सकुच न करत फागु सी खेलत तारी देत हँसत मुख मोरि ॥ बात कहौं तेरे ढोटा की सब व्रज बाँध्यौ प्रेम की डोरि । टोना सों पढ़ि नावत सिर पर जो भावै सो लेत हैं छोरि ॥ आप खाय सो सब हम मानो औरनि देत सिकहरे टोरि । सूर सुतहिं बरजो नँदरानी अब तोरत चोली बँद डोरि ॥ ७६ ॥

होरी ।

बरजो जसोदा जी कान्हा ॥ हम दधि बे-

चन जात वृन्दावन सखियन सँग घबराना । सिर की मटुकी उतार लेत है लै दधियो मुख साना । सबत घर मारे है ताना ॥ १ ॥ हम जमुनाजल भरन जात रही मारग मे अठुलाना । बरबस कान्हा मोरी गागर फोरे दैदै नयनैं का साना । करत आपन मनमाना ॥ २ ॥ ताहि समय कृष्ण आय पह्यो है आँगन रोदन ठाना । माई मोहि सखियन बहुत सतायो मारैं नयन के साना । उलटि घर आईं उरहना ॥ ३ ॥ लाल हमारे अति हैं बावरे बालक निपट अदाना । का जानैं वह रस की बतियाँ जानत खेल औ खाना । भूल गयो तेरो ज्ञाना ॥ ४ ॥ तुम साँचो तुमरो सुत साँचो हमहीं करत बहाना । सूर कहैं अब ब्रज ना बसिबे ब्रज तजि बसिबे आना । करो आपन मनमाना ॥ ५ ॥ ७७ ॥

भैरवी ।

मोहन मोरी मटुकी फोरी सुनो जसोमति माई री ॥ ऐसो लड़का भयो जगत मे मांगत

दूध मलाई री । मटुकी झटका पटका के सटकी अब नहिं देत दिखाई री ॥ लैके छड़िया निकरीं जसोदा का तुम धूम मचाई री । भोरे २ कीन्ह उरहनो ऐसो ढीठ कन्हाई री ॥ एरी माई, नन्द दोहाई याकी दधि नहिं खाई री । धेनु चरावत बीन बजावत आप लेत बुलाई री ॥ तनक मुरलिया टेर दई है सबकी मति बौराई री । ज्ञानदास उठि भोर जगावैं मोहन की चतुराई री ॥

सोरठ ।

तिहारो यह दिन दिन बिगरो जाय श्रीनँदरानी माय ॥ कँकर राख काँट झोरिन भरि संग छिछोर लवाय । भीति डाँकि निसि मे घर पैठत डाँटेहू नाहिं डेराय ॥ काँकर डारि लखै भाँड़न को आवत टाँत्र बचाय । राख डारि जल थारि सुखावै माखन लेत चोराय ॥ आप खात कछु सखन खिआवत बहुत देत ढरकाय । हम दौरत काँटे छितरावै छन मे जात पराय ॥ श्रुतिहुं चोरायो सार भाग को छांछन जग भर-

माय । देव चरित का जानैं गोपी जसुदा रही मुसुकाय ॥ ७६ ॥

रेखता ।

जसोदा जी ज़रा अब तुम कन्हैया को मना कीजे । मेरी ज़रबफ़्त की चोली लिया दुपट्टो दिला दीजे ॥ पकड़ लाई हूं मैं तुम पास जमुना तीर सों इनको । क़सम लेकर मेरे बातिन तवज्जह कर मँगा दीजे ॥ क़सम वृषभान बाबा को अगर पाऊँगी मैं तनहा । तो क्या नौबत करूँगी मैं ज़रा समझाय तुम दीजे ॥ छिना लूंगी मटुक मुरली और माला शाल पीताँबर । कवसतुभ धुकधुकी कुण्डल सभी इक बार सुन लीजे ॥ कन्हैया ने कहा एजी कि यह तो आज बंसीबट । रही हैं खेलती चौग़ान बाज़ी साफ़ सुन लीजे ॥ इसी मे आगईं सब मिल वहाँ उस वक़्त मे इक इक । लई है बाँसुरी मेरी उलट फ़र्याद क्यों कीजे ॥ कहा तुम हो बड़े नटखट तुम्हारा भेद हम जाने । चतुर आगे न चतुराई

यही मन मे समझ लीजै॥ दोऊ की गुफ़्तगू सुन कर जसोदा ने कहा ऐसी। सुनो हो राधिका तुम हो सयानी दरगुज़र कीजै॥ ८०॥

राग खम्माच ।

मोहन तू इतनी कही मान। बाहिर मति उरझै काह्न सों मेरे जीवन प्रान॥ ब्रजबनिता तेरे गुन मोसों नित प्रति करत बखान। मेरी कह्यौ तु साँच न मानै सुनि लै अपने कान॥ इन बातन सें निन्दा उपजै ठकुरायत मे हान। नारायण सुत बड़े बाप के तजि दे ऐसी बान॥

भैरवी ।

अब जनि जाइ कहूं तुम लालना। गर्गगिरा मन समुझि लगत भै तासों भवन झूलिये पालना॥ दधि माखन बिधि दियौ घनेरो तोसों अधिक और को मेरो। काहे जात तात काह्न घर निति उठि देत उरहनो ग्वालिना॥ नारायण अनुकूल हमारो तिसरे पन दीनो इक बारो तासों श्याम धाम निज खेलो हलधर सहित

गोपिका बालना॥ अटारूढ़ देखो बन शोभा तरु प्रसून अलिगण मन लोभा। हरिविलास सुख राशि धरणि ब्रज बोलत मोर बिटप की डालना॥

राग झँझौटी तीनताला।

मैया यह झूंठहि दोष लगावै। बूझ लै मेरे सखा सङ्ग से जो तोहि साँच न आवै॥ भवन रहूं तौ तुही कहैगी गौचारन नहिं जावै। जो जाऊँ तो यह मग छेड़ें फेर उरहनौ लावै॥ त्रिया चरित्र रचैं ढिग तेरे तोरि कै हार दिखावै। तू जननी मेरी अति भोरी याकी कहै पतिआवै॥ कित गजराज कहां मृगछौना अनघड़ मेल मिलावै। नारायण मोहन मुख बातैं सुनि जसुमति मुसक्यावै॥ ८३॥

रेखता।

सखी मन प्यारी हठी है मना दोगी तो क्या होगा। जहां में खैर का डंका बजा दोगी तो क्या होगा॥ न खाना मुझको भाता है नहीं

निस नींद आती है। प्रिया के पास गर जाकर मिला दोगी तो क्या होगा ॥

दोहा ।

प्यारी रूठी ए सखी, कहा कीजिये हाय ।
बनतै न और उपाय कोऊ, मरूँ आज विष खाय ॥
दिवस चिन्ता मे जाता निस तरैयाँ गिन गँवाता हूं। करूं कर जोर कर मिन्ती बुला दोगी तो क्या होगा ॥ कभी सीना धड़कता है प्रिया जब याद आती है। सखी इस होल का शर्बत पिला दोगी तो क्या होगा ॥

दोहा ।

चिन्ता मे दिन जात चरु, धड़कत सारी रात ।
खान पान की सुधि नहीं, बैठे रयन बिहात ॥
जिगर सीना दिलोदीदा विरह मे फट गये रोरो । लगाकर वस्ल का मर्हम बचा दोगी तो क्या होगा ॥ चलो हरिजन हमीं चलकर प्रिया से कह सुना देवें। अजी इस नीमजाँ को गर जिला दोगी तो क्या होगा ॥ ८४ ॥

रेखता ।

इतनों न मान कीजै व्रषभान की दुलारी ॥ तेरे मनाइबे में मोहि श्रम भयो है भारी ॥ प्रीतम को आज तो बिन पल छिन न चैन आवै । नहिं जी लगत भवन में नहिं व्रनकी छवि सुहावै ॥ हँस बोलिबौ कहां को नहिं खान पान भावै । हाथन में चित्र तेरो पुनि २ हिये लगावै ॥ अति विकल ह्वै रह्यो है वह साँवरो बिहारी । इतनों न मान कीजै व्रषभान की दुलारी ॥ १ ॥ प्यारे के आगे अपने गुण को मैं कर बड़ाई । तेरे मनाइबे कूं बीरा उठा कै आई ॥ बल बुद्धि मोमें जितनो तितनो मैं सब लगाई । पै नेकहूं न मेरी चतुराई काम आई ॥ सब विधि सों राजनीति मैं कहि २ कै तोसों हारी । इतनो न मान कीजै व्रषभान की दुलारी ॥ २ ॥ तेरी तौ नित बड़ाई सखियाँ सभी बखाने । प्यारी हिये कौ कोमल सुपनेहूं रिस न जाने ॥ यह आज कहा भयो है बैठी हौ भ्रकुटी ताने । उन स-

खिजनन की कहिबी अब कौन साँच माने ॥ सब झूंठही बड़ाई भामिन करें तिहारी । इतनों न मान कीजै वृषभान की दुलारी ॥३॥ लालन के साथ मिल कै बनशोभा निरखौ प्यारी । कहुं सघनै ललित छाया कहुं फूली फुलवारी ॥ जल सों भरे सरोवर झुकि रही द्रुमन की डारी । बोलत अनेक पक्षी बरनत हैं छवि तिहारी ॥ चल वेगही पधारौ यह लालसा हमारी । इतनों न मान कीजै वृषभान की दुलारी ॥ ४ ॥ एरी सुघर सयानी मो बिन्ती मान लीजै । तजि कै यह मान मुद्रा प्यारे सों हेत कीजै ॥ नितही अधर सुधारस हँस २ के दोऊ पीजै । फिर कर न उनसों रूठो बरदान येही दीजै ॥ नारायण याही कारण निज गोद में पसारी । इतनों न मान कीजै वृषभान की दुलारी ॥ ८५ ॥

कान्हड़ा दरबारी ।

ऐसो मान न कीजै बारबार ॥ एरी सुहागिनि भामिनि तोपै हौं पीवों जल वारवार ॥

उत सों लाल पठावत तो ढिग तू इत सों दे टारटार । मैं चौगान की गेंद भई री मेरे नहीं पग चारचार ॥ तेरो मान अपमान है मेरो स-मझावत गई हारहार । नारायण विधि कैसे लगे तू पात २ में डारडार ॥ ८६ ॥

रेखता प्यारीजू का ।

सुनो लाला नहीं वाजिब है आना तुमको मेरे घर । बसो घर जा के ललिता के अजी बस मैं न मानूंगी ॥ करो तुम लाख गर मिन्नी टोज कर जोर कर प्यारे । तुम्हारी देख ली हमने मु-हब्बत मैं न मानूंगी ॥ गये कल कहके हम से तुम रहूंगा आज तेरे घर । न आये सख्त हो झूठे कन्हैया मैं न मानूंगी ॥ चलो बस जावो अपने घर न छेड़ो हम सतायोंको । नमक छि-ड़को न जखमों पर करो कुछ मैं न मानूंगी ॥ सताये को सताते हो तुम्हे ग़ैरत नहीं आती । जिगर छेदो न नेज़े से विरह के मैं न मानूंगी ॥ मरे को मारना प्यारे कहो किस मत मे वाजिब

है । बस अब हुज्जत जियादा मत बढ़ाओ मैं न मानूंगी ॥ सुनो हरिजन कहो हम्से चले जावें यहां से अब । तिहारी है क़सम मुझ को न मानूंगी न मानूंगी ॥ ८७ ॥

झँझौटी ।

मोहि मति रोकै री तू एरी ब्रजनागरी । रूप को निधान है तू गुनन की खान है तू तोहि सम कौन आज तेरो बड़ो भाग री ॥ कहै तौ मैं नृत्य करूँ बाँसुरी मे राग भरूँ कान्हरौ बिहारौ भैरो सोरठ बिहाग री । तू तौ सदा उपकारी हितहू की करनहारी आज नारायण मोसों क्यौं राखै लाग री ॥ ८८ ॥

होरी ।

बिनय करौं कर जोरि सुनो प्यारी बिनती मोरी ॥ बीते काल जाम निसि प्यारी आवतहौं तेरी पौरी । ललिता आय धाय मोहि मग तै गई लवाय बरजोरी । मेरो कछु बस न चलोरी ॥ १ ॥ बहुत कह्यौ समुझाय बिनय करि दै दै

सौंह करोरी । सुनी न कछु बिनती मेरी मैं पर-
बस जांय फँसोरी । हृदय प्रछताय रह्योरी ॥२॥
होरी को दिन आज सखीरी ब्रज की खोरीखोरी ।
मारत रंग कुमकुमा केसर अबिर उड़त झोरी
झोरी । सकल ब्रज फाग मचोरी ॥३॥ जो कछु
चूक भई हो मोसों करो अब माफ किसोरी ।
मान त्यागि मिलु बेगि हरषि हिय मैं चेरो तेरो
री । तेरे पग सीस धरो री ॥४॥ गहि कर चि-
बुक प्रिया को मोहन कहत निहोर निहोरी ।
गावैं ग्वाल गुलाल उड़ावैं नाचैं सखी सब तोरी ।
चलो मिलि खेलैं होरी ॥ ५ ॥ उर उमग्यो आ-
नन्द प्रिया के सुनत बचन हरि कोरी । बिहँसि
उठी कर राखि श्याम गल मिलि गई सुन्दर
जोरी । सखी निरखैं तृण तोरी ॥ ६ ॥ हरिजन
लखि बिहार श्रीहरि को भई बिबुधि मति भोरी
कहि जै जैति किशोर साँवरो जै बृषभान कि-
शोरी । सुमन नभ तें बरसो री ॥ ८६ ॥

चञ्चल चपल खिलारी बनो है आजु कुञ्ज-

बिहारी ॥ अबिर गुलाल कुमकुमा केसर कारन कनक पिचुकारी । हँसि २ ताकि २ कर मारत भीज गई तन सारी । मनो सखी फिरत उघारी ॥ एक सखी उनमें उठि बोली ऐसो कृष्णविहारी । लेहु छिनाय पिताम्बर मुरली पकरि बनाओ राधा प्यारी । राधाजी कों कृष्ण मुरारी ॥ सोरहो सिँगार पहिरायो लाल कों निपट बनायो नर नारी । गत २ चलत हिलत नकबेसर नन्दहि द्वार सिधारी । जसोदा यह कौन तिहारी ॥ मुसुकि २ बोले यदुनन्दन देखो न तुम महतारी । ब्रज की सखी सब ऐसी निडर हैं यह गति कीन्ह हमारी । देत सब लाखन गारी ॥ हरखि निरखि छबि उनकी जसोदा इक टक रहहिं निहारी । विश्वदयाल निहाल भये जब हरि चर्चा लगी प्यारी । यही रही आस हमारी ॥९०॥

होरी ।

लाल लली दोउ चातुर होरी खेलि रहे सयनन मे । सकत न खेलि उजागर पापिनि

लाज बसी नयनन मे ॥ बाम अङ्ग यह परसत अपनो वह दाहिन अयनन मे । एकै गात गुं-लाल लगावहिं भींजि रहे मयनन मे ॥ दोउक-स्रो दोउ सुन्दर मूरति देखि रहे अयनन मे । दोउ अङ्कन मे मुख धरि सोवत ज्यौं पंछी डय-नन मे ॥ कोऊ पैन भरि भेद न पावत दुन्ह सूनी रयनन मे । दुर्गम देव रहस्य न कैसेउँ आइ सकै बयनन मे ॥ ६१ ॥

खेमटा ।

आली सियाबर कैसा सलोना। कोटि मदन मूरति नेउछावर दैदै सखी चलौं भाल दिठोना ॥ मोर डरत जिय डगर बगर मे कोऊ सखी करि देइ न टोना। हौं तो जाइ ललकि उर लगिहौं रैहौं न देइ जो मोहि भर सोना ॥ कहर पयो यह जनक सहर महँ छूट्यो री खान पान निसि सोना ॥ श्रीरघुराज मोरवारे पर अब तौ मोहि फकीरिन होना ॥ ६२ ॥

पिया तेरी सुरत पर मैं वारी। या मुख की

मुसुकान माधुरी बार २ पिया बलिहारी। जुलुफ अंजब तेरो गजब गुजारै कतल करैं जैसे मलबारी। श्रीरघुराज जुलुम तेरी आँखैं दिल को दिवाना करि डारी ॥ ९३ ॥

मोरी नई रे अँगिया मसकाय गैलेरे। हठ करि करि कान्हा कर पकरतु है सिर की गगर ढरकाय गैलेरे। मैं तो गई जमुनाजल भरिबे कठिन सनेहिया लगाय गैलेरे। अब तो हमैं छैला ब्रज तजि गैले डारि बिरह कलपाय गैलेरे ॥९४॥

गगरी लिये अँठिलात गुजरिया। गोरबदन मदमस्त नागरी राह चलत बल खात कमरिया। पार करत मेरो अव्हर करेजा भौंहैं कुटिल तेरी बाँकी नजरिया। जोहत राह तेरी हम ठाढ़े क्यों ना आवत मोरी नगरिया। हरिजन सरन चैन ना तुम बिन क्यों तरसावंत भान दुलरिया ॥

चलु परिहट मत रोंकु डगरिया। ऐसो लँगर मेरो डगर न छाड़त भारी लियें सिर जल की गगरिया ॥ बेर भई जल भरन आइ हूं न-

नह कुटिल मोरी सासु झगरिया। तोहि निलज कछु लाज न आवत सारी हँसत यह ब्रज की नगरिया ॥ हार गई तुमसों मैं नटखट रिसि उपजत मुख आवत गरिया। हरिजन सरन बि-रिज ना बसिबे कौन करै तोसों निति की र-गरिया ॥ ९६ ॥

होली खम्माच ताल जत ।

मोपे अबहीं ललन पिचुकारी न डार । मोको घरवाँ करत सब मार मार ॥ भयुं बयस पर अबहीं कुआरी, जियरा फिरत मेरो डार डार ॥ कहै मारकंडे मन मान ले मोहन, बि-नती करत तोसों बार बार ॥ ९७ ॥

होरी काफी ।

मति मारो पिचकारी स्याम अब देउँगी मैं गारी ॥ भीजैगी लाल नई मेरी अँगिया चूंदरि बिगरैगी न्यारी। देखैगी सासु रिसायगी मोपै संग की ऐसी हैं टारी । हँसैंगी दैदै तारी ॥ घाट बाट सबसों अटकत हौ लैलै रार उधारी।

कहाँ लों तेरी कुचाल कहूं मैं एक २ ब्रजनारी।
जानति करतूति तिहारी ॥ मूठि अबीर न डारी
दृगन मे टूखेंगी आँख हमारी । नारायण न ब-
हुत इतरावो छाड़ो डगर गिरधारी । नये भये
तुमहीं खिलारी ॥ ६८ ॥

होली पीलू ताल जत ।

कान्हा मोसों होरी में करत बरजोरी रे ।
श्रीवृन्दावन की कुञ्जगलिन मे, बचत न कोउ
कोनों ओरी रे ॥ बरबस धरि २ गरवाँ लगावै
मोको, अबिर मलत झकझोरी रे ॥ कहै मार-
कंड कैसे निबुकों सँवलिया, अबहीं उमिरिया
की थोरी रे ॥ ६६ ॥

होली ठुमरी ।

येरी दैया मैं काह कहूं छलिया मोहि छलि
गयोरी॥ फेंट गुलाल हाथ पिचुकारी ग्वाल बाल
सब टेकर तारी, घूघट पट टारि २ रोरी मुख
मलि गयोरी ॥ १ ॥ गारी गावत डफ बजावत
आप नचत औ सखन नचावत, कर मरोरि मुख

चूमि २ चञ्चल कछु चलि गयोरी ॥२॥ ऐसो ढीठ बरजो नहिं मानै कोटिन कान्ह कुटिलपन ठानै, देखो गोइयाँ इन बातन ते जियरा जलि बलि गयोरी ॥३॥ जो सखी मैं वाको धरि पाऊँ मन भाई कर नाच नचाऊँ, क्या करूँ मोहनलाल लाल मेरे करसों निकरि गयोरी ॥ १०० ॥

लावनी ।

सखि छलिया छलकर छैल नन्द को राती। कित गयो बयो विष बेल खाय पछताती ॥ बन बीर बड़े बेपीर अहीर की जाती। सब ढूंढ़त ब्रज की बाल बिरहमदमाती ॥१॥ चौमासा रहकर वास नयन बरसाती । सखि पिय सों कीन्यों मान सोई फल पाती ॥ बिन देखे नन्द के लाल चैन नहिं आती। सब ढूंढ़त ब्रज की बाल बिरह मदमाती ॥ २ ॥ सखि रूप जवानी भरी रहत अठिलाती । नूपुर झनकार ते शोर सजन कलपाती ॥ सखी घरी पहर की बात कहत सकुचाती । सब ढूंढ़त ब्रज की बाल बिरह मद-

माती ॥ ३ ॥ मैं जानी नहिं गोपाल लाल गति घांती । हरि हो गये अन्तरध्यान वज्र कर छाती ॥ मिलि श्याम सखि नँदलाल हरषि बहु भाँती । सब ढूंढ़त ब्रज की बाल बिरहमदमाती ॥ ४ ॥ १०१ ॥

ठुमरी ।

चले गये दिल के दामनगीर ॥ अब सुधि आवे तेरे दर्शन को उठत करेजे पीर । नटवर भेष नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर ॥ आपु तो जाय द्वारिका छाये खारी सिंध के तीर । बृन्दावन बंसीबट त्यागे निरमल जमुना नीर ॥ ब्रज गोपिन की प्रेम बिसारे काह भई तकसीर । सूर श्याम ललिता उठि बोली आखिर जात अहीर ॥ १०२ ॥

सँवलिया को कौने बन ढूंढ़न जावँ । गोकुल ढूंढ्यों बृन्दावन ढूंढ्यों ढूंढ़ फिरी नँदगावँ ॥ ढूंढ़ फिरी मोहिं कोउ न बतावत जाउँ कवन अब ठावँ । सूरश्याम मोहि आनि मिलाओ चरनन के बलिजावँ ॥ १०३ ॥

ठुमरी।

प्यारे ऐसी निठुरता कीनी। जा दिन तें बिछुरे तुम हम सों रञ्चहु सुधि नहिं लीनी॥ वेई घन कुञ्जलता द्रुम ब्रज केलि करी रँग भीनी। तेइ न सुहात लगत दावा सम ठौर परत नहिं चीनी॥ खान पान लै सङ्ग सिधारे नींदहु अर्पण कीनी। तलफत फिरत वियोगन तुम्हरी देह परी सब झीनी॥ लै सरबस हमरो तुम प्यारे बिरह बिथा बड़ दीनी। गोपिन की सुन हाय रसिक पिय केवल जानि अधीनी॥ १०४॥

राग कल्यान।

कहै कोइ परदेसी की बात। मन्दिर भाग अरध कर दै गये हरि भखु देखो जात॥ शशि रिपु बरष सूर रिपु युग भर हरि रिपु की अब घात। घम पञ्चक लगये श्यामघन तातें मन अकुलात॥ मन मोहन बिनु रहि न परतु है बार बार बिलखात। सूरदास बस भई विरह के कार मींजत पछितात॥ १०५॥

धूरिया मलार ज० ति० ।

आज कहुं कूकत री बनमोर, करत पपीहा सोर। चपला चमकि २ डरपावत, चलत पवन झकझोर । जित तित इन्द्रबधू बहु डोलें, श्याम घटा चहुंओर । सूनी सेज नींद नहिं आवत, रहि २ उठत मरोर। हाय दई कबधों घर ऐहैं, लाल पिया चितचोर॥ १०६ ॥

मलार ।

चहुंदिसि घन गरजत डरपावत। घन घमण्ड महि तक नियराने श्याम नजर नहिं आवत ॥ कब देखब नैनन तें प्रभु को सोच अधिक उर छावंत । अँधियारी भई भानु कुपित भये बुन्द गगन झरि लावत ॥ दामिनि दमकि दरद उर महँ अति दादुर विरह जगावत। विश्वरूप दुख सिन्धु बिना हरि को जग माहिं बचावत॥१०७॥

नैनघन रहत न एक घरी। कबहुं न घटत सदा पावस यह लागिये रहत झरी ॥ विरह इन्द्र बरसावत निसि दिन ब्रज पर अधिक करी ।

धाये ॥ हम घन तरसत तुम दरसन को तुम बिन को हिय लाये । रामप्रताप कहै सुनु सखी कोउ सौतिन बिरमाये ॥ ११० ॥

सखी रीं श्याम घटा जुरि आई ॥ उमड़ि घुमड़ि घन गरजत आवत पवन चलत पुरवाई । दामिनि दमकि २ डरपावत निसि अँधियारी छाई ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत कोइल कूक सुनाई । हरित भूमि चहुं ओर सुहावन शोभा बरनि न जाई ॥ एक श्याम ब्रजबास तजे ते ये सब भे दुखदाई । हे ब्रजराज बेग सुधि लीजै और न आन उपाई ॥ दीनानाथ भक्तहितकारी क्यों नहिं करत सहाई । रामप्रताप राम के चेरे रामराम रटलाई ॥ १११ ॥

राग बढ़ंस ।

हो गये श्याम दूज के चन्दा ॥ मधुबन जाय भये मधुबनियां हम पर डारि प्रेम को फन्दा ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर अब तो नेह पड़्यो कछु मन्दा ॥ ११२ ॥

खिमटा ।

रे निरमोहिया छवि दरसाय जा । कान चाल की श्याम विरह घन मुरली मधुर बजाय जा ॥ ललित किशोरी नयन चकोरन दुति मुखचन्द दिखाय जा । भयो व्रहत यह प्राणं बटोही रूसे पथक मनाय जा ॥ ११३ ॥

खम्माच ।

सजन मुखड़ा दिखला जा रे, तेरे दर्शन को तरसैं हैं नयन ॥ बालपन की लागी लगन छूटत नाहीं करों कोटि जतन, दिखलाजा सूरत मनमोहन जरा बँसिया बजा जा रे ॥ ढूंढ़ फिरी सारा बन २ मैं तौऊ न पाये नन्द के नन्दन, बिरमाय रखे काहू सौतन रसिया महराजा रे ॥ लैकर भसम रमाई बदन सब छाड़ि उतारे भूषण बसन, तेरे कारन मैं भई जोगिन कुल की तज लाजा रे ॥ जो कछु चूक परी हम पै अब माफ़ करो तुम नन्द के नंदन, श्रीधर पिया आज जलदी मोहि गरवा लगा जा रे ॥ ११४ ॥

राग जंगला ।

श्याम सुंदर मन मोहनी मूरति सुन्दर रूप उजारी रे॥ चरण कमल पिंडरी जंघन पर सोहत कट लचकारी रे। नाभि गँभीर हृदै अति कोमल कृपा सिंधु बनवारी रे॥ भुज आजानु करन बिच बंसी लकुट लिये गिरधारी रे। ग्रीव चिबुक मृदु हसन मनोहर हों लख छक बलिहारी रे॥ नासा नयन भौंह अति बांकी जिन मोही ब्रजनारी रे। श्रवण कपोलन पर छूटी वे नागिन लट बलदारी रे॥ भाल विशाल पेच सिर जूड़ा मुकुट झुकन सुखकारी रे। जुगलकिशोर मोरपखधारी अब क्यों सुरत बिसारी रे॥ ११५॥

होरी राग जंगला ।

या मोहना मोहि आन ठगो री॥ सखी को रूप धस्यो नँदनन्दन आयो हमारी पोरी। मैं जान्यों कोइ परम सुन्दरी आई हमारी ओरी। धाय के मैं चरन गह्यो री॥ १॥ चरण पखारि मँदिर लै आई हँसि २ कंठ लगायो री। सुन्दर

बरन मधुर सुर सजनी तब मेरो जिया बस आयो री । प्रेम तन को रही बोरी ॥ २ ॥ मोहि बुलाय गयो कुंजन मे कर छल बल बहुतेरी निपट अकेली जानि मोहि मोहन तब मन आन गह्यो री । ढीठ छलिया नँद को री ॥ ३ ॥ ऐसी री यह कुंजबिहारी याते कोउ न बचोरी । सूरदास ब्रज की सखियन मे, पारब्रम्ह प्रगट्यो री । जाने सब को री ॥ ४ ॥ ११६ ॥

राग विहाग ।

मधुकर श्याम हमारे चोर । मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयन की कोर ॥ पकरे हुते आन उर अन्तर प्रेम प्रीत के जोर । गये छुड़ाय तोड़ सब बन्धन दै गये हसन चकोर ॥ उचक परों जागत निस बीते गिनत तारे भइ भोर । सूरदास प्रभु हत मन मेरो सरबस लै गयो नंद-किशोर ॥ ११७ ॥

राग भैरो ।

जाजा रे भँवरा दूरदूर । तेरो सो चढ़ रङ्ग है

उनको जिन मेरो चित कियो चूरचूर। जब लग तरुन फूल महकत है, तब लगि रहत हजूर जूर। सूरश्याम हरि मतलब मधुकर लेत कलीं बंस घूरघूर ॥ ११८ ॥

राग देस ।

नारीहू न जाने वैद्य निपट अनारी रे। बूटीं सब झूटी परीं औषध न कारी रे। जाओ वैद्य घर अपने को मेरे पीर भारी रे। जमुना किनारे ठाढ़ी ओढ़े कसूमी सारी नन्द जू के ढोटा मोहि नयना भर मारी रे। श्रीगोकुल मे वैद्य बसत है वाही को बुलाय के दिखाओ मेरी नारी रे। पुरुषोतम प्रभु वैद्य हमारे वाही छबीले ते लगी है मेरी यारी रे ॥ ११९ ॥

विहागं ।

ऊधो ब्रज को गमन करो। मेरे बिना वि- रहनी गोपिका तिनके दुक्ख हरो ॥ जोग ज्ञान परबोध सबन को ज्यों सुख पावें नार। पूरब

ब्रह्म अलख परचो कर मोहि बिसारैं डार ॥ सखा प्रवीन हमारे हो तुम याते थाप महन्त । सूर-श्याम कारन यह पठवत ह्वै आवैगो सन्त ॥ १२० ॥

राग बैराग ।

मधुकर लाये योग सँदेस ॥ करि उर कठिन लिख्यो ब्रजनायक सुनि २ होत अँदेस । चन्दन तज तन छार लगाऊँ जटा बाँधि सिर केस ॥ तजि आगार बसौ कानन चल धरौ बाम मुनि भेस । रानी भई कंस की दासी ह्वै गये कृष्ण नरेस ॥ तुम ऊधौ मन्त्री ह्वै धाये करन योग उपदेस । सूरश्याम अब हरि मिलाप की आस रही नहिं लेस ॥ १२१ ॥

राग देस ।

श्याम को सँदेसा ऊधौ पाती लैके आयो रे ॥ पाती तो उठाय लीनी छाती सों लगाय लीनी घूंघट की ओट दैके ऊधौ समझायो रे ॥ बसती उजाड़ दीनी उजड़ी बसाय लीनी कुब्जा पट-रानी कीनी मोहि न सोहायो रे ॥ सूरश्याम जू

के आगे ऐसी जाय कहियो ऊधो जीवत खसम किन भसम रमायो रे ॥ १२२ ॥

ताल धीमा तिताला ।

ऊधो धन तुमरो व्यवहार । धन वो साध धन्यं तुम सेवक धन हम बरतनहार ॥ काटत आम बबूल लगावत चन्दन खेत उजार । हम को जोग भोग कुबजा को ऐसी समुझ तिहार ॥ साहन बाँधत चोरन छोड़त चुगलन को अधिकार । हंस मयूर शुका पिक त्यागत कागन को इतबार ॥ तुम हरि पढ़े चातुरी विद्या निपट कपट चटसार । सूरदास प्रभु कैसे निबहै अन्ध धुन्ध सरकार ॥ १२३ ॥

राग नट ।

मधुकर निकसत नाहीं स्वाँस ॥ रटत नाम मनमोहन निसि दिन बैठगई मम भाँस । तिथि परमान अवध आवन की बीते द्वादस मास ॥ आन अनाथ नाथ बिन हमको देत मनो भव तास । केकी पच्छ मुकुट दृग अटको उर अटकी

मृदु हाँस ॥ चितवन बङ्क न भूलत मन सों परी प्रेम गर फाँस । सूरश्याम नहिं आवत हरि अब गहे कौन धों गाँस ॥ १२४ ॥

राग केदारो ।

मधुकर इतने हो गये दीन ॥ कम्बु कपोत कुन्द सीखहर हिमकर अधिक मलीन । दाड़िम बिम्ब प्रवाल कीर मृग कञ्जन खञ्जन मीन ॥ चम्पा कनक मराल सरासन सायक अति बल-हीन । श्रीफल कदल मृनाल कोकिला व्याल महा छबि छीन ॥ रूप कुरूप भयो हमरो तन सुन ऊधो परवीन । सूरस्याम मनमोहन जब से मधुपुर गमन करीन ॥ १२५ ॥

राग मारू ।

ऊधो काल चाल भी रासी । मन हरि म-दनगोपाल हमारो बोलत बोल उदासी ॥ एही पर हम योग करहिं क्यों अविगति है अविनासी। गुप्त गोपाल करी बनलीला हम लूटी सुखरासी ॥ लोचन उमगि चलत हरि के हित बिन देखे म-

रिसासी । रसना सूरश्याम के रस बिन चातक हूं ते प्यासी ॥ १२६ ॥

राग सोरठ ।

श्याम बिनोदी रे मधुबनियां । अब हरि गोकुल काहे को आवहिं चाहत नवयौबनियां ॥ वे दिन माधव भूलि बिसरि गये गोद खिलाये कनियां । गुहि २ देती नन्द यसोदा तनक काँच के मनियां ॥ दिना चार ते पहिरन सीखे पट पीताम्बर तनियां । सूरदास प्रभु तजी कामरी अब हरि भये चिकनियां ॥ १२७ ॥

कलिंगड़ा ।

हरि सों जाय कहिउ बिरहिन की । कछु सोइ जतन बेग पिय प्यारे शूल मिटे मन मैन दहन की ॥ ऐसे कठिन भये नँदनन्दन सुधि भूले ब्रजलोग चहन की । नारी ब्रज गँवारि कर त्यागी कुबजा भई पटरानी मोहन की ॥ निसि दिन मदन बैर अब ठान्यो कौन आस है प्रान रहन की । तापर तुम बैराग सिखावत बलिहारी मुख

बैन कहन की ॥ रीत प्रतीत सबै हम जानी कीन्हीं प्रीत भली निबहन की । हरिविलास हरि तजि निठुराई लाज करी कछु बाँह गहन की॥८

ताल धीमा तिताला ।

कुबजा ने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम ह-मारा रे । निस दिन चलत रहत नहिं राखि हम नैनन जल धारा रे ॥ अब यह प्रान कैसे हम राखैं बिछुरे प्रान हमारा रे । ऊधो तब ते कल न परत है जब से श्याम सिधारा रे ॥ अब तो मधुबन जाय ले आवो सुन्दर नन्ददुलारा रे । सूरदास प्रभु आनि मिलाओ तन मन धन सब वारा रे ॥१२९॥ सोरठ ।

बैराग पन्थ खड्गधार पग न धरब हो ॥ घूमि २ बन पहाड़ योगिनी स्वरूप धार अलख अलख मुख पुकार कैसे करब हो ॥ पलङ्ग फुलवन सँवारि तकिया मखमल कीदार कैसे के बिछाय मृगछाल परब हो॥ काले यही भँवर बार पन्ना हिय हरित हार सूल सेली डार गले राख कैसे भरब हो ॥

ऊधो सुनि सौत भार विरह जरत अँग हमार
जाय जमुनाजल माझधार बरू डूब मरब हो ॥

रेखता ।

बेवफ़ाई क्या कहूं मैं श्याम गुलरू यार की ।
हम से खामोशी करै कुब्जा से बातैं प्यार की ॥
अब हमैं दरवेश होने को हुकुमनामा लिखा ।
मुन्सफ़ी क्या खूब देखी दौलते दरबार की ॥
फ़ुर्क़ते जाना मे गो दिल को नहीं होशोहवास ।
पर अभी हसरत है बाक़ी माहरुख़ दीदार की ॥
दम प दम है दम तड़पता देखे बिन उसकी अदा ।
ऐ तबीबे दो जहाँ अब ले ख़बर बीमार की ॥
नन्द के फ़र्ज़न्द से अब जा कहो यों हरिबिलास ।
अबतो वे बातैं निबाहैं क़ौल औ इक़रार की ॥

दूसरा ।

ऊधो ऐसी जाय कहिये जिस तरह आवैं गोपाल । दिल मेरा बेदिल हुआ है देखे बिन प्यारे जमाल ॥ एक दम बाक़ी रहा है ताब तन मे है नहीं । श्याम बिन कैसे जियेंगी बेक़रारी

है पामाल ॥ हमको सहरा मे नचाया शर्म सब जाती रही । अब चाहे योगिन बनावैं हम फँसौं उल्फ़त की जाल ॥ बेवफ़ाई छोड़ दिल्बर रह्म दिल भी हो ज़रा । हो चुकीं हम इश्क़ मे तेरे बहुत अब पायमाल ॥ अर्ज़ यह कहिये हमारी मिन्नतैं कर हरिबिलास । भर नज़र अब आय देखैं गोपियाँ कैसी बेहाल ॥ १३२ ॥

बारहमासी छन्द हरि गीत ।

सावन सुहावन मोर नाचै कूक सुनि छाती फटै । घन घोर सोर कठोर गरजै रैन चात्रिक बहु रटै ॥ ऐसे भये बेपीर पीतम प्रीति सुधि कछु ना रही । कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम पद पङ्कज गही ॥ १ ॥ भादों भलो मन भावतो हरि भोग कुबजा को दियो । बन रास केलि बिसारि मोहन बिरह सब हमको कियो ॥ घन झमक झर चहुंओर बरसत निरखि दृग देहो दही । कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम पद पङ्कज गही ॥ २ ॥ अब क्वार नाहिं सम्हार

काढ़ कुमुदि सर बिकसी भली । जमुना सलिल सित पुलिन रमनी बिमल नभ चाँदनि खिली ॥ उनमथत मनमथ सरद निसि सखि श्याम बिन धीरज नहीं । कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम पद पङ्कज गही ॥३॥ कातिक करत पूजन सबै हम गौरि शीव विश्वेश्वरी । कर जोरि सब बर-दान मांगत पाऊँ मूरति साँवरी ॥ अब त्यागि मधुपुर ब्रज पधारैं और कछु नाहीं चही । क-हियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपद पङ्कज गही ॥ ४ ॥ अगहन सँदेस बिदेस माधो रहत हम नित बावरी । सब लाज काज बिसारि हेरत पन्थ निसि दिन साँवरी ॥ सुधि करत हम पटहरन लीला नैन जल धारा बही । कहियो बिथा समु-झाय ऊधो श्याम पद पङ्कज गही ॥ ५ ॥ हिम पूस हमरो तन कँपावत श्याम मधुपुर को गये। उन प्रीति करि अनरीति कीन्हीं कूबरी के बस भये ॥ मन बिबस करि बिरहा दियो ,हरि नेह को बदला यही । कहियो बिथा समुझाय ऊधो

श्याम पद पङ्कज गही ॥ ६ ॥ अब माघ मास बसन्त आयौ कन्त बिन कछु ना बनै । ब्रजनारि अनि गँवारि त्यागी चेरि सँग आनँद घनै ॥ कान्हि को विश्वास कारन बेद बुधि कबिजन कही । कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम पद पङ्कज गही ॥ ७ ॥ भल मास फागुन योग फगुआ आय ऊधो तुम दियो । अब अधिक कहि बैराग कीजै श्याम रँग मन रँग लियो ॥ ब्रज-ग्वाल बाल गुलाल खेलत भस्म सब युवतिन लही । कहियो बिथा संमुझाय ऊधो श्याम पद पङ्कज गही ॥८॥ लखि चैत कानन बिटप फूले हरित पल्लव युत नये । जिमि बिरह अङ्कुर हम हदै बहु फूल दुख फूलत भये ॥ करि कपट हरि मथुरा सिधारे सूल उर जब तें सही । कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम पद पंकज गही ॥९॥ बैशाख मास निरास कीन्हों नन्दनन्दन साँवरे । नित याम आठो काम बस हम बाम अति मन बावरे ॥ भूलत नहीं अब चरित ऊधो दान मिस

कीन्हीं दही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम पद पंकज गही ॥१०॥ अति ओठ ज्वाल प्रचण्ड प्राकृत मार दाहत देह को। जग प्रीति सम.सं-काठ नहीं नातो अनोखो नेह को ॥ मन धीर मोहि आवै जबै यदुवीर छवि देखौं वही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्यामपद पंकजगही ॥११॥ लागे असाढ़ घमण्ड चहुंदिसि घुमड़ि घन गरजन लगे। लखि दमक दामिनि त्रिबिधि बायू चियन मन मनसिज जगे ॥ अब हरिबि-लास हुलास कीजे आय बृन्दावन मही। कहियो बिथा समुझाय ऊधो श्याम पद पंकज गही ॥

रेख़ता।

मेरे नामा को ऊधो जी कन्हैया जी को जा देना। हमारी बन्दगी कहना अदब से सर झुका देना ॥ हमें तो तज गये मोहन भये कुब्जा के जा गोहन। ख़ता हमसे हुई है कौन मौक़: से बता देना ॥ कहूं क्या हाल अपना आप आँखों देखे जाते हैं। जिगर का ख़ून खाती हैं जवानी

यह सुना देना ॥ पठाई योग की पाती बँचाई सुन दही छाती। रसिक रस की जो है प्याली हलाहल है मिला देना ॥ नहीं जाना कि हैं हँसि दिखाकर दाम को दाना। फँसाया अर के फन्दे मे व आखिर को दगा देना ॥ अबस रु-सवा किया हमको गँवाई लाज कुल जी की। मुनासिब था नहीं उनको यह नाहक की सजा देना ॥ जसोदाजी की दिल्दारी चयाँ है विश्व मे सारी। कहां है ऐसी महतारी भला कब है भुला देना ॥ सुना कान्हा भये त्यागी लिया है योग वैरागी। कुबरिया काम मे लागी उसे उलटो हटा देना ॥ क़लम आरी है लिखने से जुबाँ माजूर कहने से। फ़िदा की ग़र्ज़ मिलने से कन्हैया को मिला देना ॥ १३४ ॥

होरी।

कहियो री यह अरज हमारी ॥ टेक ॥ कहि न जात बिछुरन की वेदन सहि न जात दुख भारी। उठत कराहि चाहि कर बैठत विरह

अगिन तन जारी। पीर नहिं जात सम्हारी॥ छिन आँगन छिन भीतर बाहर छिन २ चढ़त अटारी। छिन अकुलाय हाय गहि मींजत आ तकसीर हमारी। श्याम सुधि मोरि बिसारी॥ भूलि असन बसन सब बिसरे छूटि गई तन सारी। टूनी पीर भई उर अन्तर सूनी सेज हमारी। मनो नागिन सी कारी॥ निसि दिन व्याकुल रहत राधिका चात्रिक की अनुहारी। सूरश्याम जल बरसि जुड़ाओ याही अरज हमारी। श्याम बलिहारी तुमारी॥ १३५॥

कजलियां।

काहे मोरी सुधि बिसराये रे बिदेसिया। तड़पि २ दिन रैन गँवाऊँ काहे मोसे नेहियां लगाये रे बिदेसिया॥ आप तो कुबरी के प्रेम भुलाये मोहि लिखि योग पठाये रे बिदेसिया। कहै बेनीराम लाये प्रेम कटरिया ऊधो जी को ज्ञान भुलाये रे बिदेसिया॥ १३६॥

प्रितिया रे लगा के कान्हा गैले परदेसवाँ

रामा । अजहूं नाहीं लिहले मोरि सुरतिया रे हरी ॥ बटिया रे जोहत मोरी बितलीं उमरियां रामा । असवा रे लगा के दगवा दिहले रे हरी ॥ पँतिया रे पठा के पिछली प्रितियां रे जगौले रामा । बुझली रे अगिनियाँ फिर सुलगौलें रे हरी ॥ बँसिया रे बजाके कान्हा जियरा तरसौले रामा । हरिजन से सनेहिया झूठौं लौले रे हरी॥

घेरि घेरि आवै घटा कारी रे बुंदेलवा ॥ द-मंकि २ दामिनि डेरवावै, पपिहा पुकारै डारी डारी रे बुंदेलवा ॥ यह सावन बिन श्याम न भावै, मारै बिरह कटारी रे बुंदेलवा ॥ कहत र-सीले पिय मधुवन छाये, कासे कहीं अपनी ल-आरी रे बुंदेलवा ॥ १३८ ॥

काहे मोसे जियरा लगाये बाँके मोहना । करि के प्रीति हम को तजि दीना मथुरा नग-रिया मे छाये बाँके मोहना ॥ जब से गये सैयाँ सुधिहु न लीनी कुबजा सवतिया बनाये बाँके मोहना । जमुना तट बंसीवट गोकुल वृन्दावन

बिसराये बाँके मोहना ॥ वा दिन की सुध भूल गई सब दान मांग दधि खाये बाँके मोहना । सावन मास घटा घन गरजे बिजुली चमकि डरपावे बाँके मोहना ॥ भादों मे कजरारी बदरियां झमकि झमकि झर लाये बाँके मोहना । लाल बिकल भई है ग्वालिन पावस कहवाँ बिताये बाँके मोहना ॥ १३९ ॥

बँसिया बजावै रे साँवलिया ॥ जब से सुनी निसु नींद न आवे । बिरहा सतावै रे साँवलिया ॥ खान पान कछु काम न भावै । जिय तरसावै रे साँवलिया ॥ कहत रसीले हमें कलपाये । कवन कल पावै रे साँवलिया ॥ १४० ॥

मेरी गली आजा रे साँवलिया ॥ [illegible]र भेष काछनी काछैं, बँसिया बजा जा रे साँवलिय ॥ बिरह सतावै चैन नहिं आवै, तपत बुझा जा रे साँवलिया ॥ तेरे दरस को जिय तरसतु है, गरवाँ लगा जा रे साँवलिया ॥ कहत रसीले अरज यह मानो, ब्रज के राजा रे साँवलिया ॥

सावन ऐसो हो सोहावन मेघा बरसे झमाझोर। श्यामघटा छाई चहुंदिसि घन गरजि रह्यो चहुंओर॥ कोयल कूक रही कुञ्जन मे बोल रह्यो बनमोर। सरद समीर बहै पुरवैया जमुना कर रही सोर॥ सखि सब सावन कजरी गावैं नाचैं मण्डल जोर। हिलि मिलि झूलैं रंगहिंडोला तरसै जियरा मोर॥ सखि अपने २ पीतम सँग बिलसैं ब्रज की खोर। हम व्याकुल सगरी निसि हरि बिन तलफि २ हो भोर॥ ए ब्रजनाथ नाथ हरिजन अब बिनय करत करजोर। बेग दिखाय बदन बिधि पूरो करो मनोरथ मोर॥

गरजि २ फेरि ऐलै रे बदरवा रामा, रहि २ जियरा मोरा तरसै रे हरी॥ बिजुरी चमाके झोंकि बहत बयरिया रामा, झीमी २ बुंदिया बारी बरसै रे हरी॥ सोहै ना सेजरिया छनो लागे ना नजरिया रामा, रतिया गुजारत कहर भैलैं रे हरी॥ कवन दिवस अस बिधना दिखैहै रामा, हरिजी के देखिबै भर नजरिया रे हरी॥

हरि बिन जियरा मेरो तरसै सावन बरसै घंनाघोर ॥ झूम झूम नभ बादर आये चहुंदिसि बोलत मोर । रैन अँधेरी रिम झिम बरसै डरपै जियरा मोर ॥ बैठी रैन बिहात सोच मे तड़प तड़पैं हो भोर । पावस बीतो जात श्याम अब आके भवन बहोर ॥ आइ श्याम उर सोच मिटाओ लागों पैंयां तोर । हरिजन हरिहिं मनायें पाँव परि विनय करत कर जोर ॥ १४४ ॥

संस्कृत गजल ।

वसन्तश्चारु आयातो ममानङ्गप्रदीपोऽयम् ।
प्रभाते वै प्रवातो ऽपि निकुञ्जे भृङ्गगुञ्जोयम् ॥
वने कच्छे पुरे पथ्ये नदीतीरे तमालेऽपि ।
गिरौ गोदावरीकूले लसत्यस्मिन् रसालोयम् ॥
लसत्कालिन्दिकाकूले कदम्बानां कदम्बेऽपि ।
कलापी कोकिला कूजत्यजस्रं भृङ्गपुञ्जोऽयम् ॥
चलन्मन्दे समीरे हे शुभे वृन्दावने रम्ये ।
लतापत्रान्तरे नक्तं विलीनश्चैवचन्द्रोऽयम् ॥
क्व सा रासस्थली पुण्या क्व वै वंशीनिनादोऽपि ।

निशा सा क्वास्ति कल्याणि क्व हा मे कृष्णचन्द्रोयम्
क्व सा राधा क्व सा गोपी क्व वा सा गोकुला रम्यां।
क्व वासस्तहिहंगानां क्व वाशा नोप्यनाथेऽयम् ।
सत्या वर्त्तते दीना विना कृष्णान्तु हन्तैषा ।
सनाथा द्वारिका जाता विनाथो मोहनः सोयम् ॥

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदा के हाथ क्या आया । तड़पता छोड़ कर तेग़े क़ज़ा के हाथ क्या आया ॥ दिखाकर टुक जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा । भला पूछो कोई उस महलक़ा के हाथ क्या आया ॥ मेरे इस गुञ्चये दिल को कभी उसने न आखोला। गई बालाई बाला उस सबा के हाथ क्या आया ॥ लगाना ख़ून दिल चाहा था मैने उसके पाओं से । वले इस पेशक़दमी से हिना के हाथ क्या आया ॥ फिरा शहरों बियाबाँ तालिबे दीदार नारयण । बिठाया उसको पर्दे मे हया के हाथ क्या आया ॥

लावनी ।

पिया गये परदेस कवन सा देस जहाँ बि-

ल्म्हे प्यारे । पी के कारन, सखी मैं ढूंढ़ फिरी मुल्कों सारे ॥ टेक ॥ चली सुंदर रीवाँ झब्बलपुर सागर बूंदी को जाती । मुलक चँदेरी, ग्वालियर पुना सितारा नगिचाती ॥ अमरावति गुजरात मालवा बुढ़ानपुर तक नहिं पाती । झाँसी दतिया, ढूंढ़ के झन्ना पन्ना पछताती ॥ निमच हैदराबाद नागपुर सुरत बम्बई गुलजारे। पी के कारन, सखी मै ढूंढ़ फिरी मुल्कों सारे॥ १॥

प्रयाग बाँदा लखनऊ कानपुर चली सुंदर कम्पू स्याने । कनउज कोयल, फरुक्खाबाद कालपी सब जाने॥ मिरठ मुरादाबाद भरथपुर सदर आगरा सुन स्याने । दिल्ली अम्बाला, जलन्धर फगवाड़े भी सब छाने ॥ कासमीर करनाल लहाउर क्या काबुल क्या कन्धारे । पी के कारन, सखी मैं ढूंढ़ फिरी मुल्कों सारे ॥ २ ॥

तखत जवनपुर टाँड़ा बँगला आयोध्या पहुंची नारी । बुटउल बेतिया, जनकपुर आजमगढ़ की तैयारी ॥ रामपूर बड़हर गोरखपुर ब-

हराइच बसी न्यारी। बाँसबरैली, सु पीलीभीत नूरपुर जा हारी॥ तानसेन नैपाल कवेसर चिनं बुटान ढूंढ़ा जा रे। पी कै० ॥ ३ ॥

रामनगर कासी नयनागढ़ गाजीपुर को चली अबला। रसरा छपरा, दिनापुर पटने तक नहीं पता मिला॥ मुंगेर मकसुदाबाद भगलपुर राज-महल जहाँ बना किला। चली बाँकुड़ा, सयदपुर कलकत्ता है पुरुब जिला॥ ढाँका औ बंगाल ढूंढके मिले कटकपुरि मे प्यारे। पी कै० ॥ ४ ॥

हुई मिहर उस रब की नार पर बहुत दिनो पर मिले सजन। शाहअली हैं, हमारे गुरु हनुमत पर सदा मगन॥ हनूमान का दुर्गा चेला ज़िलों शहर का किया कथन। वृन्दावन मे, हैं गाते बेनीराम औ बाँकेधरन॥ मिरज़ापुर दरम्यान ख्याल यह बबईगिर ने ललकारे। पी के कारन, सखी मैं ढूंढ़ फिरी मुल्कों सारे॥ ४ ॥ १४७ ॥

ऐक्ट २० सन् १८४७ के अनुसार इसकी रजिष्टरी हुई है।